



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-33

कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 08 नवम्बर से 14 नवम्बर 2017 तक

मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी से मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

विकास के
खोखले...

पृष्ठ- 3

इन वास्तु
उपायों.....

पृष्ठ- 4

कृषि क्षेत्र
में सुधार..

पृष्ठ- 5

धर्म के नाम
पर अधर्म...

पृष्ठ- 9

राजनीति के
महारथी...

पृष्ठ- 12

- लोकतंत्र पर कुठाराघात
- विश्वव्यापी आतंकवाद को खत्म करने के लिए उग्रवादी सोच से लड़ना होगा
- महान क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा
- आधुनिक भारत और इस्लाम
- नेतृत्व के अभाव से जूझती कांग्रेस

पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर के लिए वार्ताकार नियुक्त करने के भारत के कदम को खारिज किया

देश के आंतरिक मामलों में दखल देने का अधिकार पाकिस्तान को नहीं—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर के लिए वार्ताकार नियुक्त करने के भारत के कदम को खारिज किया। पाकिस्तान ने कहा कि भारत सरकार की घोषणा एक बार फिर से बल प्रयोग की निरर्थकता और वार्ता की अपरिहार्यता को बयां करती है। पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर में लोगों की वैध आकांक्षाओं को समझने के लिए वार्ताकार नियुक्त करने के भारत के कदम को अवास्तविक बताते हुए कहा कि हुरियत कांफ्रेंस की

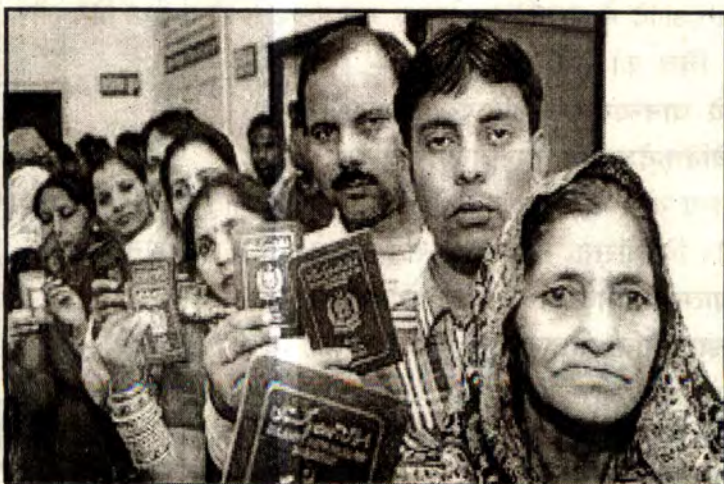
शेष पृष्ठ 11 पर



पाकिस्तान से आए ५१ हिन्दू विस्थापितों को मिली भारतीय नागरिकता सभी हिन्दू विस्थापितों को मिले भारत की नागरिकता—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

पूर्व में केंद्र सरकार द्वारा भारतीय नागरिकता प्रदान की जाती रही है, लेकिन वर्ष २०१५ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस प्रक्रिया में परिवर्तन करते हुए राज्य सरकार को भारतीय नागरिकता प्रदान करने का अधिकार दिया। मुख्यमंत्री रमन सिंह और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री हंसराज अहीर ने ५१ हिन्दू विस्थापितों को भारतीय नागरिकता पंजीयन प्रमाण पत्र प्रदान किया।



केंद्रीय गृह राज्य मंत्री हंसराज अहीर ने पाकिस्तान से आए ५१ हिन्दू विस्थापितों को भारतीय नागरिकता पंजीयन प्रमाण पत्र प्रदान किया। मुख्यमंत्री रमन सिंह और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री हंसराज अहीर ने यहां शदाणी दरबार के पीठाधीश संत गोबिंदराम साहेब के ७३ वें जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ५१ हिन्दू विस्थापितों को भारतीय नागरिकता पंजीयन प्रमाण पत्र प्रदान किया। अहीर ने कहा कि भारतीय नागरिकता प्रमाण पत्र प्रदान करने का यह कार्यक्रम महत्वपूर्ण और अनुकरणीय है। अहीर ने कहा कि छत्तीसगढ़ विस्थापित हिन्दू परिवारों को भारतीय नागरिकता प्रमाण पत्र देने वाला देश का पहला राज्य है, इस पहल के लिए मुख्यमंत्री रमन सिंह और उनका सम्पूर्ण मंत्रिमंडल बधाई के पात्र हैं। उन्होंने नागरिकता प्राप्त करने वाले लोगों को बधाई देते हुए कहा कि नागरिकता प्रमाण पत्र मिलते ही आप पवित्र भारत भूमि के नागरिक बन गए हैं। अभी कुछ दिन पहले पूरे देश में दीपावली का पर्व मनाया गया है, आज का दिन उनके लिए दूसरी दीपावली मनाने जैसा है। छत्तीसगढ़ से प्राप्त ऐसे अन्य आवेदनों पर केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा त्वरित कार्रवाई की जाएगी पाकिस्तान सहित अन्य देशों से आए विस्थापित हिन्दू परिवारों, जो अन्य राज्यों में निवासरत हैं। उन्हें भारतीय नागरिकता प्रदान

शेष पृष्ठ 11 पर

‘सफल जीवन की सार्थक ऊर्जा’

आचार्य अशोक सहजानन्द

हमारे जीवन के दो मुख्य घटक हैं—सुख और दुःख। आदमी सुख चाहता है, दुःख नहीं चाहता। पर शायद एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जिसने जीवन में सुख ही सुख भोगा हो, दुःख का अनुभव नहीं किया हो या जिसके जीवन में दुःख ही दुःख आये हों, सुख न आया हो। यह निश्चित तथ्य है, एक के बिना दूसरा होता ही नहीं। सुख के समय सुखी न बनना और दुःख के समय दुखी न बनना, बंधन से मुक्ति पाने की कला है।

अशुभ कर्मों का विपाक होने पर दुःख के प्रस्तुत होने पर दुःखी नहीं होना, समता के साथ कर्मपुल को भोगना प्रायः संभव नहीं बनता। आज का मानव उस कला से परिचित नहीं है। इसलिए समस्याएँ विकराल बन जाती हैं। समस्या यह है कि व्यक्ति कर्मफल को भोगते समय अपने विवेक का उपयोग नहीं करता। पुण्य का उदय आता है तो व्यक्ति अहंकार से भर जाता है। वह आदमी को आदमी नहीं समझता। जब पुण्य का विपाक आता है उदय आता है, तब सुविधा भी मिलती है। व्यक्ति उसे भोगता है किन्तु वह उसमें इतना आसक्त न बने, सुख भोगने में ही लिप्त न हो जाए, जिससे पुण्य के फल का भोग सघन पाप का कारण बने।

सुख और दुःख—इन दोनों स्थितियों में जो सम रहना नहीं जानता, आसक्ति और पीड़ा से मुक्त रहना नहीं जानता, वह न जीवन की कला को जानता है, न कर्म बंधन से छुटकारा पाने की कला को जानता है। किस प्रकार सुख की अवस्था में गर्व से मुक्त रहे किस प्रकार दुःख की अवस्था में प्रसन्न रहे दीन—हीन न बने यह छोटी सी बात समझ में आती है तो मानना चाहिए, जीवन जीने की सबसे बड़ी कला समझ में आ गई।

लाभ, सुख, जीवन, प्रशंसा और सम्मान—ये पाँच अनुकूल परिस्थितियाँ हैं। अलाभ, दुःख, मरण, निन्दा और अपमान—ये पाँच प्रतिकूलता की स्थितियाँ हैं। इन दोनों में सम रहना ही धर्म है। जहाँ विषमता आई धर्म खंडित हो गया। लाभ में भी तनाव, अलाभ में भी तनाव अनुकूलता में भी तनाव, प्रतिकूलता में भी तनाव। जो विवेक करना नहीं जानता, वहाँ दोनों ही परिस्थितियों में समस्या को निमंत्रण दे देता है। लाभ और हानि इन दोनों ही स्थितियों में हम अपने विवेक में समता पैदा कर सकते हैं, लाभ होने पर हम सोचें, संयोग है, धन मिला है, किन्तु यह अनिन्य है, यह स्थिर नहीं रहता। जब यह भावना आ जाती है, तब न लाभ तनाव पैदा कर पाता है न हानि तनाव पैदा कर पाती है। यह मान लिया जाए — संयोग अनिन्य है। संयोग का वियोग निश्चित होता है तो वियोग के होने पर भी अथवा प्राप्त न होने पर भी तनाव नहीं आएगा। मस्तिष्क का वह प्रकोष्ठ जो समता पैदा करता है, जागृत हो जाए तो तनाव पैदा नहीं होगा। जागृत करने का तात्पर्य है मस्तिष्क को इस प्रकार साध लेना कि वह सम और विषम दोनों स्थितियों में एकरूप रहे। पाँच अनुकूल और पाँच प्रतिकूल इन दस परिस्थितियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल जाए तो समस्या का समाधान सामने दिखाई देगा। जिस व्यक्ति ने अपने आपको नहीं देखा, आत्मा को नहीं देखा, उसकी पदार्थ के प्रति होने वाली भ्रांति कभी टूटेगी नहीं। उस व्यक्ति के पदार्थ के प्रति भ्रांति टूटती है जिसने अपने आपको देखा है। जब हम अपनी आत्मा को जानने की दिशा में आगे बढ़ेंगे तब हमारी पदार्थ विषयक भ्रांतियाँ टूटेंगी। हमारा प्रशिक्षण अलग प्रकार का बन जाएगा। जब तक पदार्थ के जगत में रहेंगे, अपने भीतर झाँकने का प्रयत्न नहीं करेंगे तब तक भ्रांतियाँ बनती ही चली जाएँगी।

समता और तनाव — मुक्ति में अन्ततः सम्बन्ध है है समता का उपलब्धि का अर्थ है — तनाव से मुक्ति। हमारी अन्तःचेतना का झुकाव सदा समता की ओर रहता है किन्तु व्यवहार का गुरुत्वाकर्षण इतना तीव्र होता है कि वह विषमता की ओर खींचता है। एक ओर से समता की प्रेरणा प्राप्त होती है, दूसरी ओर से विषमता की प्रेरणा, यह बड़ी समस्या है। जो व्यक्ति समता के साथ जीते हैं उनको महान आदर्श माना गया है। जिन लोगों ने विषमता का जीवन जिया है, उनका इतिहास तो है पर उन्हें आदर्श व्यक्ति नहीं माना गया। उनके जीवन का अनुसरण किसी ने नहीं स्वीकारा।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कई लोग सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। व्यक्तिगत व व्यावसायिक सम्बन्धों के बीच आप व्यस्त रहेंगे। नौकरी वाले जातक स्थानान्तरण को लेकर मानसिक रूप से परेशान रहेंगे परन्तु आप के द्वारा किये गये प्रयासों में सफलता मिल सकती है।

वृष : इस सप्ताह कुछ इच्छाओं की पूर्ति होगी तथा कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त उपलब्धियों से आप सभी परिस्थितियों में सहज महसूस करेंगे। ऑफिस में सहकर्मियों और अधीनस्थ व्यक्तियों का साथ आनन्दायक रहेगा। आर्थिक लेन-देन में सावधानी बरतें।

मिथुन : इस सप्ताह अत्यन्त कष्ट की स्थिति में रहेंगे इससे बचने के लिये नकारात्मक सोच को हावी न होने दें। व्यवसायिक लोगों के साथ नये अनुबन्ध करने के अवसर प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत सम्बन्धों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

कर्क : पति व पत्नी के आपसी नासमझी के कारण पूरे परिवार में तनाव का माहौल रहेगा। आप अपनी जिम्मेदारियों से मुंह न मोड़ें तथा उनका डटकर मुकाबला करें तभी अपने आपको साबित कर पायेंगे। व्यवसाय में धन के लेन-देन में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

सिंह : इस सप्ताह आप कुछ बातों को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे जिसके कारण आपका किसी कार्य में मन नहीं लगेगा। नौकरी व व्यवसाय में परिवर्तन का समय आ गया है लेकिन रूके हुये कार्यों में आपको शीघ्र ही सफलता मिलेगी।

कन्या : घर व ऑफिस में सामंजस्य बिठा पाने में आप अक्षम रहेंगे। इस सप्ताह आपके पास कोई ऐसा प्रस्ताव आयेगा जिसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त शुभ रहेंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ हँसी-मजाक में समय व्यतीत होगा।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोगों को मानसिक वेदना होने की आशंका है। आर्थिक उपलब्धियों के लिये नकारात्मक व भावनात्मक सोच को बदलना ही हितकर रहेगा। इस सप्ताह नये लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

वृश्चिक : इस सप्ताह पुरानी समस्याओं का समाधान होने के आसार हैं। महिलायें अपने भावनात्मक रिश्तों में अति शीघ्रता न करें अन्यथा मुसीबत में पड़ सकती है। पैतृक सम्पत्ति में हिस्सेदारी मिलने पर नये प्लानों को सक्रियता प्रदान करेंगे।

धनु : इस सप्ताह सामाजिक सम्बन्धों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार में दुःख दर्द से भरा माहौल रहने की आशंका है। धन से सम्बन्धित लम्बित मामलों में प्रगति होने के आसार हैं। किसी पार्टी में आप शिरकत करेंगे परन्तु वहाँ पर आपके मान-सम्मान को ठेस पहुँच सकती है।

मकर : इस सप्ताह परिश्रम को निरन्तर करना पड़ेगा जिसे आप टालना चाहे तो भी टाल नहीं सकते हैं। किसी चीज का अन्तर नजर आ रहा इसका प्रतिरोध करना व्यर्थ रहेगा। अनचाहे सम्बन्धों के प्रति कड़ा रुख अपनायें। कुछ संस्थाओं से अनुबन्ध करने के अवसर उपलब्ध होंगे।

कुम्भ : इस सप्ताह आपको धैर्य व साहस का परिचय देना पड़ेगा। आर्थिक मामलों में सावधानी अपेक्षित है अन्यथा समस्याओं से घिर सकते हैं। किसी नजदीकी व्यक्ति को अधिक महत्व न दें तो हितकर रहेगा। आपके परिश्रम के दूरगामी परिणाम लाभदायक रहेंगे।

मीन : इस सप्ताह आपको आपने आलस्य के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। आप अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिये अपनी बात सबके समक्ष रखने का प्रयास करें। नवयुवक अपने कैरियर को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एव च।

जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्॥

इस लोक और परलोक के सम्पूर्ण भोगों में आसक्ति का अभाव और अहंकार का भी अभाव, जन्म मृत्यु, जरा और रोग आदि में दुःख और दोषों का बार-बार विचार करना॥८॥

असक्तिरनभिष्वङः पुत्रदारगृहादिषु।

नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु॥

पुत्र, स्त्री, घर और धन आदि में आसक्तिका अभाव, ममता का न होना तथा प्रिय और अप्रिय की प्राप्ति में सदा ही चित्त का सम रहना॥९॥

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।

विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि॥

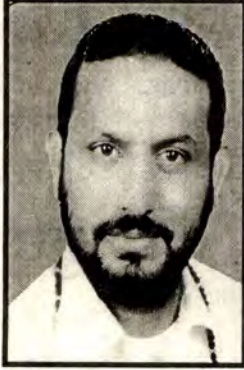
मुझ परमेश्वर में अनन्य योग के द्वारा अव्यभिचारिणी भक्ति तथा एकान्त और शुद्ध देश में रहने का स्वभाव और विषयासक्त मनुष्यों के समुदाय में प्रेम का न होना॥१०॥

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।

एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा॥

अध्यात्मज्ञान में नित्य स्थिति और तत्त्वज्ञान के अर्थरूप परमात्मा को ही देखना—यह सब ज्ञान है और जो इससे विपरीत है वह अज्ञान है —ऐसा कहा है॥११॥

लोकतंत्र पर कुठाराघात



राजस्थान विधानसभा में राज्य सरकार ने एक बिल पेश किया था, जिसमें प्रावधान था कि नेताओं, लोकसेवकों तथा जजों के खिलाफ मामला दर्ज करने से पहले सरकार से इजाजत लेनी होगी। इस बिल को विधानसभा में पेश करने से पहले राजस्थान की वसुंधरा सरकार ने सितंबर महीने की ७ तारीख को एक अध्यादेश भी जारी किया था। हालांकि इस अध्यादेश को राजस्थान हाइकोर्ट में एक वकील ने चुनौती दी है, अब यह तो कोर्ट ही निर्धारित करेगा कि ऐसे अध्यादेश की वैधता क्या है। लेकिन यह अध्यादेश वास्तव में लोकतंत्र पर कुठाराघात है, नागरिकों के अधिकारों पर कुठाराघात है, इसलिए इस अध्यादेश को तुरंत वापस लिया जाना चाहिए। यह बिल लाने का वसुंधरा राजे का यह फैसला लोगों में अपने अधिकार को लेकर बढ़ी जागरूकता के खिलाफ है। यह बिल लोगों को उस दौर में ले जाने वाला लगता है, जिस दौर में लोगों के पास जानने का अधिकार नहीं था। इसके पहले भी कुछ मुख्यमंत्रियों ने अलग-अलग तरीके से नागरिक स्वतंत्रता को छीनने की कोशिश की है। किसी अनियमितता को लेकर सूचना के अधिकार के तहत प्राप्त जानकारी के आधार पर अगर किसी नेता, किसी अधिकारी या किसी जज के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने के लिए अगर सरकार की अनुमति लेनी होगी, तो यह तो सीधे तौर पर नागरिक स्वतंत्रता पर कुठाराघात है। राजस्थान वह राज्य है, जहां सूचना के अधिकार को लेकर १९६२ में आंदोलन चला। एक साल बाद ही उस समय के मुख्यमंत्री शेखावत ने इस महत्व समझा और अधिकार के जयपुर आकर शेखावत ने सहमति जतायी कहा कि उनकी

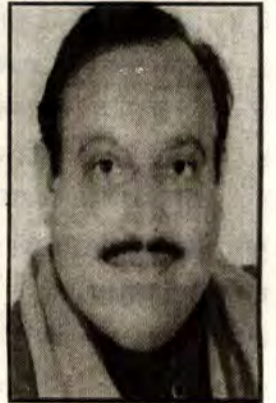
राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

भैरव सिंह
बात का
सूचना के
सम्मेलन में
आंदोलन से
और यह भी
सरकार

सूचना का अधिकार देने के लिए हर संभव प्रयास करेगी। अब यह वसुंधरा राजे की सरकार है, जो लोगों के अधिकारों को छीन रही है। हालांकि राजस्थान को एक शांत प्रदेश कहा जाता है, लेकिन राज्य सरकार के इस कदम के खिलाफ वहां भी और पूरे देश में भी आवाज उठेगी और वसुंधरा सरकार को यह अध्यादेश वापस लेना पड़ेगा। क्योंकि प्रचंड बहुमत का यह मतलब नहीं होता है कि कोई सरकार तानाशाही रूप अख्तियार करके अपने नागरिकों के अधिकारों का हनन करेगी। यह बिल सबसे ज्यादा और सबसे पहले मीडिया के लिए ही घातक होगा, क्योंकि एक नागरिक जितनी सूचनाएं मांगता है, उसे रोज मीडिया ही उपलब्ध कराता है। हमारे यहां कोई अलग से नागरिक अधिकार या मीडिया अधिकार नहीं है, जिस तरह से अमेरिका में है। भारत में जो नागरिक अधिकार है, उसी में मीडिया का भी अधिकार शामिल है। जब कोई सरकार नागरिक अधिकार में कटौती करेगी, उसका सबसे बड़ा नुकसान यही होगा कि इस हालत में मीडिया अपना काम नहीं कर पायेगा। यह कुछ उस तरह की हालत होगी, जब देश में आपातकाल लगा था। तब अखबार वाले सरकार के पास जाते थे और उससे अनुमति मिलने पर खबरें छापते थे। ठीक उसी तरह से वसुंधरा सरकार का यह फैसला है, जिसमें कि हर बात के लिए मीडिया को सरकार से अनुमति लेनी पड़ेगी और इसके लिए सरकार को एक व्यवस्था बनानी पड़ेगी। ऐसे में वसुंधरा जी से यह पूछा जाना चाहिए कि इस कदम से वे हासिल क्या करना चाहती हैं। सोशल मीडिया के इस दौर में आज हर नागरिक एक मीडिया बन गया है, सोशल मीडिया को कुछ भी लिखने के लिए कोई कैसे रोक सकता है और उसे रोका भी नहीं जाना चाहिए क्योंकि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मामला है, वसुंधरा सरकार को इस बारे में भी सोचना चाहिए था। ऐसा ही साल १९८० में बिहार में जगन्नाथ मिश्रा की सरकार ने किया था। कुछ समय बाद राजीव गांधी सरकार ने भी ऐसा ही किया। लेकिन जन-दबाव के चलते दोनों को अपने कदम वापस खींचने पड़े थे। अध्यादेश के बचाव में राजस्थान सरकार क्या कह रही है, यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि सूचनाएं जब भी रोकी जाती हैं, तो इसीलिए रोकी जाती हैं कि कुछ छुपाना है। और कुछ छुपाने का काम वही करता है, जब शासन में बैठा हुआ व्यक्ति अपने स्वार्थ में काम करता है। ऐसा व्यक्ति ही भ्रष्ट होता है और इससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। इसलिए वसुंधरा सरकार को यह बताना होगा कि उसे छुपाना क्या है, क्योंकि आज कुछ भी छुपाने वाला नहीं है। एक तरफ तो देश के मुखिया मोदी जी भ्रष्टाचार को समूल नष्ट करने का दावा कर रहे हैं और दूसरी ओर उनकी पार्टी के लोग चीजों को छिपाकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना चाह रहे हैं। सत्ताधारी नेताओं को एक बात अवश्य समझ लेनी चाहिए कि जो कुछ भी आज छुपाया जायेगा, वह कल उजागर होगा ही। और उसका दंड भी भुगतना पड़ेगा।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

विकास के खोखले दावे



खाद्य सुरक्षा को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चिंता और केंद्र सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद भारत के वैश्विक भूख सूचकांक की ११६ देशों की सूची में १००वें पायदान पर आना बेहद चिंता का विषय है, और साफ है कि खाद्यान्न को लेकर हमें केवल सरकारी नहीं बल्कि निजी और ग्रामीण स्तर पर भी गंभीर प्रयास करने की जरूरत है। आईएफपीआरआई ने भी अपनी रिपोर्ट में इस ओर इशारा करते हुए कहा है कि भारत में बच्चों में कुपोषण की उच्च दर से भूख का स्तर इतना गंभीर हो गया है कि इसे संभालना अब केवल सरकार के बस की बात नहीं, सामाजिक क्षेत्र को भी इसके प्रति मजबूत प्रतिबद्धता दिखानी होगी। इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट हमारे लिए चिंता का विषय है। आईएफपीआरआई ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भुखमरी के मामले में समूचे एशिया में सिर्फ अफगानिस्तान और पाकिस्तान ही भारत से पीछे हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इस देश में ३५.६ फीसदी महिलाओं और ३४.२ फीसदी पुरुषों का बीएमआई १८.५ से कम है। अब चेतावनी के अंदाज में इस विश्व संस्था ने भी कहा है कि जीएचआई यानी वैश्विक भूख सूचकांक में ३१.४ अंकों के साथ भारत उस गंभीर श्रेणी में पहुंच गया है, जिस पर तुरंत युद्ध स्तर पर काम किए जाने की जरूरत है। भारत की इस खराब पोजीशन की वजह से दक्षिण एशिया इस साल जीएचआई में सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले क्षेत्रों में से एक है। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत इस सूची देशों से पीछे है। चीन म्यांमार ७७वीं, श्रीलंका ८८वीं रैंकिंग में है। पाकिस्तान १०८वीं और नंबर पर है। खाद्य सुरक्षा नरेंद्र मोदी की चिंता और

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

में अपने कई पड़ोसी २६वीं, नेपाल ७२वीं, ८४वीं और बांग्लादेश इस सूची में अफगानिस्तान १०७वें को लेकर प्रधानमंत्री केंद्र सरकार के तमाम

प्रयासों के बावजूद भारत के वैश्विक भूख सूचकांक की ११६ देशों की सूची में १००वें पायदान पर आना बेहद चिंता का विषय है और साफ है कि खाद्यान्न को लेकर हमें केवल सरकारी नहीं बल्कि निजी और ग्रामीण स्तर पर भी गंभीर प्रयास करने की जरूरत है। यह एजेंसी उस रूप में भूख को नहीं आंकती, जिस रूप में हम भारतीय उसे समझते हैं। हम भोजन की अनुपलब्धता को भूखा रहना मानते हैं और हमारे हिसाब से अगर खाने से पेट भर गया तो व्यक्ति भूखा नहीं है। पर ऐसा नहीं है। दुनिया में भूख के आंकलन के लिए खाने की मात्रा के साथ उसकी गुणवत्ता और पौष्टिकता का भी ध्यान रखा जाता है। आईएफपीआरआई तो बाकायदा भूख को मापने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मानक पर काम करती है, जिसे बाडी मास इंडेक्स यानी बीएमआई कहते हैं। एक सामान्य बीएमआई के लिए अंतरराष्ट्रीय मानक सीमा १८.५ है। इस मानक के अनुसार १७ से १८.४ की बीएमआई वाले को कुपोषित कहा जाता है और १६.० से १६.६ के बीच वाले को गंभीर रूप से कुपोषित कहा जाता है। १६ से कम बीएमआई वाले को भुखमरी का शिकार कहा जाता है और भारत अन्न की उपलब्धता के बावजूद इसी पैमाने पर फिसड्डी साबित हुआ है। साल २०१६ के इस वैश्विक सूचकांक में भारत का स्थान ६७वां था जबकि साल २०१५ में ११७ देशों की सूची में इसका स्थान ८० वां था। कुपोषण, बाल मृत्यु दर, लंबाई और वजन की चार कसौटियों पर किये जाने वाले इस सर्वे में दुनिया के दूसरे सबसे बड़े खाद्यान्न उत्पादक देश का यह हाल बेहद चौंकाने वाला है, जहां कुपोषित लोगों की दूसरी बड़ी आबादी बसती है। आखिर इस बदतर स्थिति का जिम्मेदार कौन है। जिसके कारण आज भारत भूख सूचकांक में वैश्विक प्रतिबंध झेलते उत्तर कोरिया, तीन दशक से युद्ध और आतंकवाद से ग्रसित देश इराक और सहारा के भुखमरी के शिकार देशों से भी गई बीती स्थिति में पहुंच गया है। तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था के बावजूद हर साल बीएमआई इंडेक्स के अनुसार भुखमरी के शिकार लोगों की संख्या बढ़ रही है। इस रिपोर्ट को जारी करने वाले वाशिंगटन स्थित अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान का कहना है कि भारत में एक फीसदी आबादी का ५० प्रतिशत संपत्ति पर कब्जा है, जो अपने सामाजिक दायित्वों को निभाने से कतराती है। इसी तरह जीडीपी की ऊंची दर, जिसे हम अपनी आर्थिक प्रगति के उदाहरण के तौर पर पेश करते हुए गौरवान्वित होते हैं, स्वास्थ्य और पोषण की गारंटी नहीं हो सकते। इसके लिए हमें अपनी सोच बदलनी होगी। वास्तव में इस दिशा में जितना काम किया जाना चाहिए, उतना अभी हुआ नहीं। साल २०१४ में विश्व में खाद्य असुरक्षा की स्थिति, शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत में १६.०७ करोड़ लोग जहां कुपोषण के शिकार हैं वहीं रोजाना १६ करोड़ लोग भूखे सोने पर मजबूर हैं। भारत की कुल आबादी में सापेक्ष भूख की मौजूदगी करीब साढ़े १४ फीसदी है। पांच साल से कम उम्र के ३८ प्रतिशत बच्चे सही पोषण के अभाव में जीने को विवश हैं, जिसका असर मानसिक और शारीरिक विकास, पढ़ाई-लिखाई और बौद्धिक क्षमता पर पड़ता है। पोषण से भरपूर और बेहतर क्वालिटी के खाद्यान्न बाहरी देशों को भेज देना या फिर परिवहन और भंडारण व्यवस्था की खामियों के चलते खाद्य चीजों का नष्ट हो जाना भी खाद्यान्न संकट की बड़ी वजह है। इस समस्या से जूझने के लिए केवल सरकार को ही नहीं समाज को भी आगे आना होगा और अपनी सोच बदलनी होगी। यह देश अब एक दिन भी भूखा सोने को तैयार नहीं।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

सुबह के स्नान को धर्मशास्त्र में चार उपनाम दिए हैं—

१. मुनि स्नान : जो सुबह ४ से ५ बजे के बीच किया जाता है।
२. देव स्नान : जो सुबह ५ से ६ बजे के बीच किया जाता है।
३. मानव स्नान : जो सुबह ६ से ८ बजे के बीच किया जाता है।
४. राक्षसी स्नान : जो सुबह ८ बजे के बाद किया जाता है।

मुनि स्नान सर्वोत्तम है।

देव स्नान उत्तम है।

मानव स्नान सामान्य है।

राक्षसी स्नान धर्म में निषेध है।

किसी भी मानवी को ८ बजे के बाद स्नान नहीं करना चाहिए। (यानि की ८ बजे के पहले स्नान कर लेना चाहिए)

मुनि स्नान : घर में सुख, शांति, समृद्धि, विद्या, बल, आरोग्य, चेतना प्रदान करता है।

देव स्नान : आपके जीवन में यश, कीर्ति, धन, वैभव, सुख, शांति, संतोष प्रदान करता है।

मानव स्नान : काम में सफलता, भाग्य, अच्छे कर्मों की सूझ, परिवार में एकता, मंगलमय, प्रदान करता है।

सुबह करें स्नान

कृष्णचन्द्र टवाणी



वैभव, लक्ष्मी, आपके घर में सदैव वास करती है।

उस समय एकमात्र व्यक्ति की कमाई से पूरा हरा-भरा परिवार पल जाता था, और आज मात्र परिवार में चार सदस्य भी कमाते हैं तो

भी पूरा नहीं होता।

उसकी वजह हम खुद ही हैं। पुराने नियमों को तोड़कर अपनी सुख-सुविधा के लिए नए नियम बनाए हैं।

प्रकृति का नियम है, जो भी उसके नियमों का पालन नहीं करता, उसका दुष्परिणाम सबको मिलता है। अपने जीवन में कुछ नियमों को अपनायें और उनका पालन भी करें। आपका भला हो, आपके अपनों का भला हो। मनुष्य अवतार बार-बार नहीं मिलता। अपने जीवन को सुखमय बनायें। जीवन जीने के कुछ जरूरी नियम बनायें। हम प्रकृति से जुड़ें।

राक्षसी स्नान : दरिद्रता, हानि, क्लेश, धन हानि, परेशानी प्रदान करता है।

किसी भी मनुष्य को ८ बजे के बाद स्नान नहीं करना चाहिए। (यानि की ८ बजे के पहले स्नान कर लेना चाहिए)

पुराने जमाने में इसीलिए सभी सूरज निकलने से पहले स्नान करते थे। खासकर जो घर की स्त्री होती थी। चाहे वो स्त्री माँ के रूप में हो, पत्नी के रूप में हो, बहन के रूप में हो। घर के बड़े-बुजुर्ग यही समझाते सूरज के निकलने से पहले ही स्नान हो जाना चाहिए। ऐसा करने से धन,

❖ यदि आपको बहुत हिचकियाँ आ रही हैं तो अपने कानों को दोनों हाथों से बंद कर लें कुछ देर बाद पैरों की उंगलियों के बल खड़े होकर एक गिलास पानी पीजिए।

❖ जब आप अपने कपड़ों में कलफ लगा रही हो तो तब ग्लिसरीन की कुछ बूँदें डाल लें ऐसा करने से कपड़े आपस में चिपकेंगे नहीं।

❖ यदि आप चाहती हैं कि गुलदस्ते में सजे हुए फूल काफी समय तक ताजा रहें तो गुलदस्ते में एक डिस्प्रीन डाल दें।

❖ कारपेट को साफ करने के लिए गरम पानी में तारपीन का तेल मिलाकर साफ काटन के कपड़े से रगड़ें। कारपेट में चमक आ जाएगी।

❖ क्राकरी में लगे दाग-धब्बों को साफ करने के लिए डिटर्जेंट के

कुछ घरेलू महत्वपूर्ण जानकारियाँ

घोल में थोड़ा-सा नींबू का रस मिला लें। क्राकरी में जान आ जाएगी।

❖ छोटे बच्चों के घरेलू कपड़े साफ करने के लिए पानी में थोड़ा-सा सिरका मिला लें। इससे कपड़ों में आने वाली महक जाती रहेगी।

❖ नींबू के छिलकों को हल्के हाथों से दाँतों से रगड़ें। इससे न सिर्फ उसमें चमक आती है, बल्कि मुख से आने वाली दुर्गन्ध से भी छुटकारा मिल जाता है।

❖ यदि आप मोमबत्तियों को कुछ घंटे के लिए फ्रिज में रखने के बाद जलायेंगे तो वह ज्यादा देर तक जलेगी। ऐसा करने से मोमबत्तियाँ धुआँ भी कम छोड़ती हैं।

❖ यदि आपके किसी कपड़े में मेंहदी लग गई है, तो परेशान न हों। उस कपड़े को आधे घंटे के लिए गुनगुने दूध में भिगोयें और फिर अच्छी तरह से धो लें।

❖ इस्तेमाल की हुई चाय की पत्ती को आप एक खुले बर्तन में रखकर फ्रिज की चिलर ट्रे में रख दें। ऐसा करने से फ्रिज में महक नहीं आती।

❖ यदि आप चाहते हैं कि लेदर की वस्तुएँ चमकती रहें तो वैसलीन लगा लें या फिर रूई के फाहे में थोड़ा पेट्रोल लगाकर लगायें।

'इन वास्तु उपायों से खुलेगी समृद्धि की राह'

कड़ी मेहनत और प्रयासों के बावजूद जब समृद्धि आपसे दूर रहती है तो अपने घर के वास्तु पर ध्यान देना चाहिए। यह संभावित है कि आपकी समृद्धि की राह की रुकावट के लिए घर का वास्तु जिम्मेदार है। अगर घर में वास्तु दोष है तो आप कुछ आसान उपायों के जरिए उन्हें दूर करके सम्पन्नता की राह की रुकावट को दूर कर सकते हैं। कुबेर धन के देव माने जाते हैं और घर में आर्थिक संपन्नता के लिए उनकी कृपा और प्रसन्नता अहम है। वे आपसे प्रसन्न हैं तो आपको पर्याप्त धन और समृद्धि मिल सकती है। भगवान कुबेर को यदि प्रसन्न करना है और उनकी कृपा प्राप्त करना है तो व्यक्ति को वास्तु उपायों का पालन करना चाहिए। आर्थिक समृद्धि के लिए कुछ वास्तु उपायों का ध्यान रखकर न केवल आप अपनी प्रसन्नता का स्तर बढ़ा सकते हैं बल्कि समृद्धि की राह भी तलाश सकते हैं।

तिजोरी की दिशा : अपने घर में तिजोरी को हमेशा दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की दीवार के करीब रखें। इस दिशा में तिजोरी होगी तो वह हमेशा उत्तर दिशा में खुलेगी। उत्तर भगवान कुबेर की दिशा है और इस दिशा में तिजोरी खुलने का अर्थ यही है कि धन के देव कुबेर की कृपा से वह भरी रहेगी। यथासंभव तिजोरी या धन की अलमारी को किसी भी अन्य दिशा में रखने से बचें।

तिजोरी बीम के नीचे न हो : किसी भी हाल में धन या तिजोरी बीम के नीचे न हो। ऐसी स्थिति में तिजोरी रखने पर घर में सदैव आर्थिक संकट बना रहता है और बिजनेस में भी नुकसान की आशंका मंडराती रहती है।

तिजोरी के सामने आइना : धन को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले उपायों में तिजोरी के सामने आइना रखना भी एक अहम उपाय है जब भी काँच में आप धन को देखते हैं तो वह आपको हमेशा दुगुना नजर आएगा। यह आपकी सकारात्मकता को बढ़ाने का एक उपाय है जो बहुत कारगर है।

उत्तर-पूर्व दिशा में स्वच्छता : यँ तो पूरे घर में ही सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि समृद्धि आपके घर में प्रवेश कर सके लेकिन विशेष रूप से उत्तर-पूर्व दिशा में किसी भी तरह का कचरा न हो इस बात का ख्याल रहे। इस हिस्से में सीढ़ियों के निर्माण से भी बचना चाहिए। उत्तर-पूर्व कोने में मशीनरी जैसी भारी चीजें रखने से बचना चाहिए।

उत्तर-पूर्व में ऊँची इमारत न हो : अपने घर या प्लॉट के उत्तर-पूर्व दिशा में कोई ऊँची

इमारत या मंदिर वगैरह न हो ऐसा घर चुनें। अगर ऐसा होता है तो धन का नुकसान होता है। अगर ऐसी स्थिति हो तो भी इसका तो बहुत ही ध्यान रखें कि उनकी छाया आपके घर या प्लॉट पर न गिरे।

गोलाई से बचें : उत्तर-पूर्व कोने में घुमावदार दीवार के निर्माण से बचना चाहिए। इस दिशा में अगर बाउंड्री वॉल भी बनवा रहे हैं तो उसमें गोलाई न हो इस बात का ध्यान रखना चाहिए। उसे सही कोण पर मोड़ देने के बारे में सतर्क रहें।

छत की ढलान की दिशा : छत में हमेशा ढलान दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की तरफ होनी चाहिए। घर बनाते।

दीवारों की मोटाई : इस बात का विशेष ध्यान रहे कि घर की दक्षिण और पश्चिम में स्थिति दीवारें और बाउंड्री उत्तर और पूर्व की तरफ की दीवारों से ऊँची और मोटी होनी चाहिए। यह उपाय भी समृद्धि लाता है।

सड़क से ऊँचा हो भूखंड : प्लॉट खरीदते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह आसपास बनी रोड से ऊँचा हो। सड़क से निचली जगह पर होने वाला प्लॉट अच्छा नहीं माना जाता है और आर्थिक संकट का कारण बनता है।

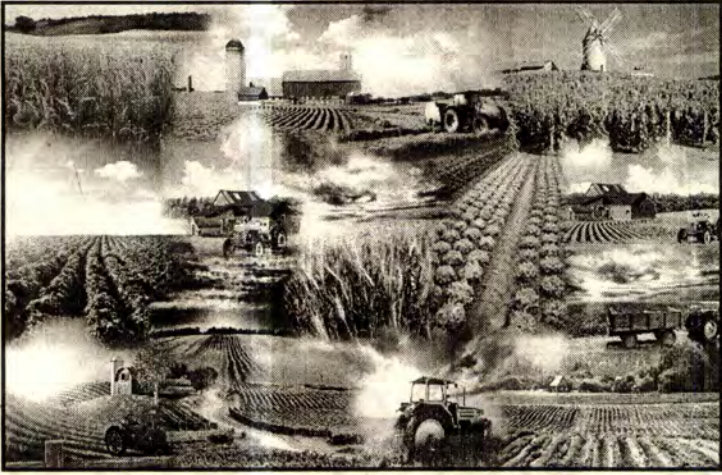
दक्षिण-पश्चिम में ऊँचे पेड़ : घर में समृद्धि के लिए दक्षिण-पश्चिम दिशा में ऊँचे पेड़ लगाए जाने चाहिए। ये वृक्ष अर्थ की स्थिरता पैदा करते हैं किसी तरह से दुर्भाग्य को टालते हैं और परिवार पर आने वाले संकट को भी दूर करते हैं। ये पारिवारिक सम्पन्नता और व्यापार में लाभ के लिए उपयोगी वास्तु उपाय है।

घर का केन्द्र रहे खाली : इस बात का ध्यान रहे कि आपके घर का केन्द्रीय भाग या हिस्सा हमेशा खाली रहे। उस जगह पर कोई निर्माण नहीं करना चाहिए। इस जगह मंदिर जरूर बनवा सकते हैं। घर का यह हिस्सा ब्रह्मस्थान माना जाता है।

स्टोर रूम की दिशा : घर में हमेशा इस बात का ध्यान रहे कि दक्षिण-पश्चिम या पश्चिमी हिस्से में ही स्टोर रूम बनाया जाए ताकि समृद्धि की राह हमेशा खुली रहे।

खिड़कियाँ और दरवाजे की सफाई : अपने घर के दरवाजे और खिड़कियों को हमेशा साफ और स्वच्छ रखें क्योंकि घर में आने वाले धन का इससे सीधा संबंध है। ये साफ नहीं होने पर धन प्राप्ति के मार्ग में बाधा पहुँचती है।

पं. सुधांशु मिश्रा



हरित क्रांति के पितामह

प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन ने गत सप्ताह ट्वीट किया था—“यदि कृषि क्षेत्र के मामले में गलती होती है तो अन्य कोई चीज भी सही नहीं रह पाएगी। कारण एग्रीगोल को किसानों के जीवन में बेहतरी को ही सभी प्रोग्रामों और नीतियों का केन्द्र बिन्दु बनाना होगा।” विश्वविद्यालय कृषि विशेषज्ञ ने मंदसौर (मध्य प्रदेश) में किसानों द्वारा फसलों के बेहतर मूल्यों तथा ऋण माफी पर दबाव बनाने के लिए 9 जून को व्यापक आगजनी किए जाने और इसके फलस्वरूप 92 किसानों के मारे जाने और कइयों के घायल हो जाने के जल्दी ही बाद सोशल मीडिया पर दस्तक दी। 2006 की स्वामीनाथन समिति रिपोर्ट ने भूमि सुधारों के अधर में लटके एजेंडे के साथ-साथ जल की मात्रा और गुणवत्ता, टेक्नोलॉजी फैटीग (जब कोई निश्चित टेक्नोलॉजी उत्पादन में एक निश्चित सीमा के बाद वृद्धि नहीं कर पाती), संस्थागत ऋण तक पहुँच, ऋण की पर्याप्त मात्रा और समय पर उपलब्धि तथा लाभदायक एवं यकीनी मार्केटिंग के अवसरों की कमी को कृषि

क्षेत्र के संकट के मुख्य कारणों के रूप में बयान किया है। इसने यह भी सिफारिश की है कि कृषि को संविधान की समवर्ती सूची में डाला जाए और प्रादेशिक स्तर पर किसानों की समस्याओं से निपटने के लिए किसान आयोग गठित किये जायें। गौरतलब है कि समवर्ती सूची में शामिल विषयों के बारे में केन्द्र और राज्य सरकारें दोनों ही कानून बना सकती हैं। 2014 के आम चुनावों से पूर्व भाजपा ने वायदा किया था कि वह किसानों को उनके उत्पादन के न्यूनतम समर्थन मूल्य की बढ़ी हुई अदायगी करने के मुद्दे पर एम.एस. स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करेगी।

किसानों की दुखद स्थिति एक बार फिर तब फोकस में आई जब मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और अन्य स्थानों पर

कृषि जिसों के बेहतर मूल्य तथा कृषि ऋण माफ किए जाने की माँग को लेकर किसान सड़कों पर उतर आये। दिल्ली के जंतर-मंतर पर जो तमिलनाडु के किसानों ने आत्महत्या करने वाले किसानों की खोपड़ियाँ हाथों में पकड़ कर मार्च माह में रोष-प्रदर्शन किया था।

किसान आत्महत्याओं की संख्या रोंगटे खड़े कर देने वाली है। इन मामले में महाराष्ट्र,

क्योंकि इनमें से अधिकतर तो पहले ही कृषि मजदूर बन चुके होते हैं। जाति आधारित सामाजिक, आर्थिक जनगणना में खुलासा किया गया है कि 75 प्रतिशत ग्रामीण परिवार प्रति माह 5000 रुपये से भी कम कमाते हैं और 60 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों की मासिक आय 90,000 रुपये से नीचे है।

किसानों की समस्याओं के समाधान के नाम पर भी

इस प्रकार के ऋण माफी कार्यक्रम अंततोगत्वा किसानों के लिए उपलब्ध ऋण प्रवाह में कमी लाते हैं। चालू वर्ष के अपने बजट भाषण के दौरान केन्द्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली ने यह बात दोहराई थी कि सरकार का इरादा आगामी 8 वर्षों के दौरान किसानों की आय दोगुनी करने का है। आय दोगुनी करने के लिए जो कदम सुझाए गए हैं। उनमें स्वायत्त हैल्थ कार्ड, पानी की एक-एक बूँद की एवज

कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए ‘सदाबहार क्रांति’ अपनाना एक बेहतर विकल्प

कल्याणी शंकर

ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना और छत्तीसगढ़ अग्रणी हैं। एक अनुमान के अनुसार हर 30 मिनट में एक के बाद एक किसान आत्महत्या करता है। 1985 से लेकर अब तक 5 लाख से भी अधिक किसान आत्महत्याएँ कर चुके हैं। राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के ताजातरीन आंकड़े बताते हैं कि आत्महत्या करने वाले किसानों में से 20 प्रतिशत ने बैंकों अथवा फाइनेंस कंपनियों से ऋण लिया था। आंकड़ों के अनुसार 2014 में 5650 किसानों ने आत्महत्याएँ की थीं और 2015 में यह आंकड़ा बढ़कर 6000 हो गया। 3030 आत्महत्याओं के साथ महाराष्ट्र पहले नंबर पर रहा।

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट भी इस प्रसंग में दिखाई देने लगी है जब उसने कहा : “यह मुद्दा बहुत ही महत्वपूर्ण है। तात्कालिक रूप में हम महसूस करते हैं कि आप लोग गलत दिशा में जा रहे हैं। किसान बैंकों से ऋण लेते हैं और जब वे लौटा नहीं पाते तो आत्महत्या कर लेते हैं। इस समस्या का समाधान यह नहीं कि आत्महत्या के बाद किसानों को पैसा दिया जाए बल्कि आपके पास इसे रोकने के लिए योजनाएँ होनी चाहिए। किसानों की आत्महत्याएँ कितने ही दशकों से हो रही हैं फिर भी हैरानी की बात यह है कि आत्महत्या के पीछे कार्यशील कारणों को दूर करने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई।” यह तो स्पष्ट है कि कृषि अब लाभदायक धंधा नहीं रह गई और किसान अन्य धंधों की ओर जा रहे हैं। किसानों की संख्या में डेढ़ करोड़ की गिरावट आ चुकी है यानी कि हर रोज 2000 किसान खेती छोड़ जाते हैं

राजनीति हो रही है। कृषि ऋणों की माफी भारत का सबसे लोकप्रिय राजनीति हथकंडा है जिसे अक्सर प्रयुक्त किया जाता है। चुनावी अभियान में तो राजनीतिक पार्टियाँ किसानों को केवल मौखिक रूप में हर प्रकार की राहत उपलब्ध करवाने के वायदे करती हैं। जब वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री थे तो उनकी सरकार ने प्रत्येक किसान का 90,000 रुपये का ऋण माफ करने का वायदा किया था और इसी वायदे पर 1986 में सत्ता में लौटे थे। इसी प्रकार यू.पी.ए. सरकार भी 3 करोड़ 70 लाख किसानों के 522 अरब रुपये के ऋण माफ करने के वायदे के बूते 2006 में सत्ता में आई थी। तेलुगुदेशम व तेलंगाना राष्ट्र समिति भी क्रमशः आंध्र और तेलंगाना के किसानों के ऋण माफ करने के वायदे पर ही 2014 में सत्ता में लौटी थीं।

यू.पी. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भी सबसे पहला फैसला छोटे और सीमांत किसानों के एक लाख रुपये तक के ऋण माफ करने का ही था। 2017 के विधानसभा चुनाव से पूर्व भाजपा ने ऐसा करने का वायदा किया था। तेलंगाना और महाराष्ट्र भी ऋण माफी की सूची में शामिल हो गए हैं। छत्तीसगढ़ ने किसानों को ब्याज मुक्त ऋण देने की पेशकश की है। एम.एस. स्वामीनाथन के अनुसार कृषि ऋण माफी केवल अस्थायी रूप में ही समस्या से निपटती है और यह कोई स्थायी समाधान नहीं है। इसके फलस्वरूप प्रादेशिक और केन्द्र सरकारों को वित्तीय घाटे का सामना करना पड़ता है। रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने 2014 में टिप्पणी की थी कि

में अधिक फसल लेने के रुझान को बढ़ावा देना होगा और इसके साथ ही ऋण उपलब्धता बढ़ाते हुए कटाई के बाद फसल के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्द्धन तथा बाजार सुधार के काम में मुस्तैदी लानी होगी।

कृषक समुदाय की समस्या है कि उसके पास न तो दूरदृष्टि वाला कोई नेता है और न ही शक्तिशाली आन्दोलन। चौधरी चरण सिंह, महेन्द्र सिंह टिकैत, बलराम जाखड़, शरद जोशी इत्यादि जैसे कद्दावर नेताओं का जमाना लद चुका है। यह ऐसे नेता थे जो न केवल अपने समुदाय के पक्ष में सशक्त ढंग से बोल सकते थे बल्कि नीतियों को प्रभावित भी करते थे। आजकल के हार्दिक पटेल जैसे नेता तो उनके आसपास भी नहीं पहुँचते। भारत गेहूँ, चावल तथा कपास के अग्रणी उत्पादकों में से एक है और 2015 में 9 करोड़, 2 लाख, 30 हजार टन चावल निर्यातक भी बन गया और हाल ही के वर्षों में गेहूँ तथा मक्की का भी बड़ी मात्रा में निर्यात कर रहा है। ऐसे में यदि सरकार किसानों की चिंताओं का समाधान ढूँढ़ने का प्रयास करती है तो अभी भी बिखरे बरों का कुछ नहीं बिगड़ा है। हरित क्रांति (ग्रीन रेवोल्यूशन) से सदाबहार क्रांति (एवरग्रीन रेवोल्यूशन) की ओर प्रस्थान करने के स्वामीनाथन के सुझाव पर अमल करना एक विकल्प हो सकता है। केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा किसानों की समस्याओं का तत्काल समाधान किए जाने की जरूरत है और इस संबंध में तैयार की जाने वाली स्कीमों का लाभ वास्तविक लाभार्थियों तक पहुँचाना चाहिए।

आत्म ज्ञान को जानना ही सच्ची पहचान है।

आज मानव अपने शरीर के नकली रूप को असली रूप मान बैठा है। जबकि उस उसका असली स्वरूप नहीं है। हम शरीर को चलाने वाली परमात्मा की अंशी “आत्मा” रूपी “रू” हैं जैसे एक परिवार में कई सदस्य रहते हैं वे एक दूसरे को शरीर से पहचानते हैं आत्म से नहीं। सारे विश्व के मानव में यही भ्रान्ति हो रही है जबकि आत्मा की पहचान ही अपनी सच्ची पहचान है यानि अपने आप को जानना ही “आत्म ज्ञान” है। आत्म ज्ञान की प्राप्ति संत समागम से होती है। आत्म ज्ञान के बिना शान्ति संभव नहीं है। जिस प्रकार सूर्य सबके लिए एक है उसी प्रकार यह ज्ञान सम्पूर्ण विश्व मानव के लिए एक है। आप जो यह जाति पाति का भेदभाव देख रहे हैं, यह सब शरीर सम्बन्धी है। जबकि हम सभी आत्माएँ एक ही “परमात्मा” रूपी “रू” की अंशी आत्मा रूपी “रू” हैं। यह ज्ञान सभी विश्व धर्म ग्रन्थों में प्रमाणित है जिसे ‘ब्रह्मसूत्र’ में ब्रह्मज्योति गीता में “दिव्य ज्योति” गुरु ग्रंथ साहिब में “चांदना” कुरान में खुदा का नूर तथा बाइबिल में “डिवाइन लाईट” आदि आदि कहा गया है। आज के युग में “तत्त्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी” उस आत्म ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराते आ रहे हैं।

निर्मल सिंह

लोकतान्त्रिक मूल्यों पर आधारित राजनीति करने वाले नेताओं व विरासत में मिली नेतागिरी में अंतर समझना हो तो राहुल गांधी के नित्य नये नये बचकाने बयानों को समझें। मूलतः नेहरू-गांधी की विरासत से देश की मुख्य पार्टी कांग्रेस के उपाध्यक्ष बनें राहुल वर्षों से राजनीति में अपने को स्थापित करने में लगे हुए हैं। परंतु ये पिछले दस वर्षों (२००४-२०१४) के संप्रग सरकार के कार्यकाल में

भारतीय जीवन क्या होता है, का क्या किंचित मात्र भी ज्ञान है?

ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेसी विशेषतौर पर गांधी परिवार सत्ता से बाहर होने की पीड़ित मानसिकता से अभी तक उभरा नहीं है। लेकिन यह इतना सरल भी नहीं है क्योंकि जो परिवार जीवन भर सत्ता का सुख

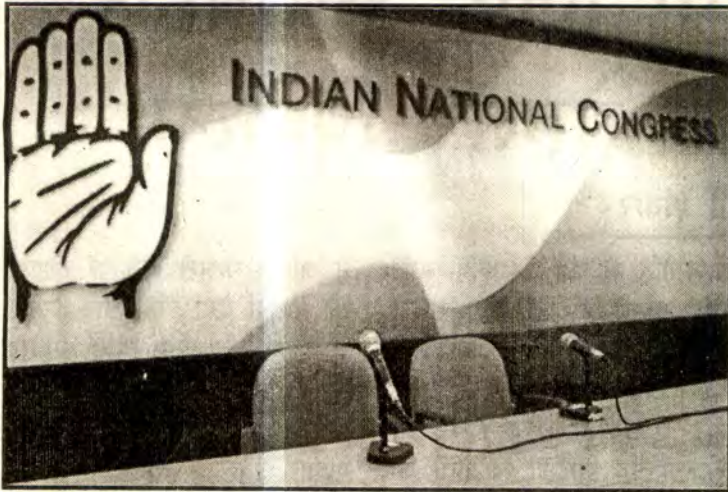
इशरत जहां आदि के मुठभेड़ में मारे जाने पर उस समय (जून २००४) गुजरात के मुख्य मंत्री श्री नरेंद्र मोदी को घेरने का षडयंत्र भी एक बहुत गंभीर आपराधिक कृत्य था जिसमें उस समय के केंद्रीय गृहमंत्री आदि की गतिविधियां भी अत्यंत संदिग्ध थी। समय समय पर

दुर्भावनाओं और अति अल्पसंख्यकवाद के कारण साम्प्रदायिक हिंसा रोकथाम विधेयक २०११ जैसे असंविधानिक षडयंत्रों को रचने लगी तो राष्ट्रीय बहुमत ने सम्पूर्ण कांग्रेस को २०१४ के लोकसभा चुनावों में लगभग पूर्णतः नकार दिया था। इस अन्यायकारी षडयंत्र के प्रति अनेक

संस्कारहीन व अयोग्य राहुल को ही अपना सर्वोच्च नेता बनाने के लिये अनेक वर्षों से प्रयत्नशील है। क्या यह विचित्र नहीं है कि लूटी पिटी कांग्रेस के बेरोजगार नेता वर्षों पुरानी अपनी चाटुकारी परंपरा को निभाते आ रहे हैं? इसीलिए बेचारी सोनिया के स्थान पर बेचारे राहुल को कांग्रेस का

नेतृत्व के अभाव से जूझती कांग्रेस

✶ विनोद कुमार सर्वोदय



कांग्रेस की मुखिया अपनी माता श्रीमती सोनिया के अथक प्रयासों के उपरान्त भी अभी तक सफल नहीं हो पाये हैं।

दलितों-निर्धनों आदि के यहां नई नई नौटकी करने वाले राहुल को कांग्रेस के शीर्ष परामर्शदाताओं ने उनकी अयोग्यता का अनुचित लाभ उठाकर अपने अपने स्वार्थों के कारण राजनीति के व्यूह में फंसा दिया है। फिर भी दुर्भाग्य यह है कि देश का सबसे पुराने राजनैतिक दल के पदाधिकारी व सामान्य कार्यकर्ता गण भी गांधी परिवार की चाटुकारिता से बाहर निकलना ही नहीं चाहते। जिसके कारण अपनी पार्टी के शासन काल में प्रायः निष्क्रिय रहने वाले राहुल गांधी आज प्रमुखता से नकारात्मक राजनीति का मोहरा बन गये हैं। यह भी दुःखद है कि अन्य प्रमुख कांग्रेसी नेता भी माँ-बेटे के आभाचक्र के फेर में राष्ट्रीय राजनीति में कोई सकारात्मक भूमिका निभाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि मौन मनमोहनसिंह को कठपुतली बना कर अपनी माता व बहनोई (रॉबर्ट वड्डेरा) के साथ अनेक आर्थिक घोटालों से देश को लूटने में किस किस की भूमिका थी, का राहुल को कोई ज्ञान न हो? लेकिन वैभवशाली जीवन जीने वाले कांग्रेसी युवराज को निर्धनता व अभाव भरा सामान्य

भोगता रहा वह आज सत्ता से बाहर होने की खीझ से अत्यंत विचलित न हो, ऐसा हो नहीं सकता। क्या विपक्ष में बैठ कर जनादेश का सम्मान करना कांग्रेस के हाईकमान की राजशाही मनोवृत्ति को ठेस पहुंचा रहा है? राष्ट्र व समाज की उन्नति के लिए सामान्य विधायी कार्य रोकना व निरंतर लोकसभा में अवरोध बनाये रखने से ऐसा प्रतीत होता है कि विपक्ष वर्तमान सरकार के प्रति दुर्भावना से ग्रस्त होकर शत्रुता पूर्ण मनोवृत्ति बनाये हुए है। पिछले वर्ष राहुल गांधी द्वारा जिस सक्रियता से केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद व जेएनयू नयी दिल्ली में हुए राष्ट्रविरोधी तत्वों को नैतिक समर्थन दिया गया वह अति निंदनीय था। क्या विपक्ष में बैठने वाले राजनेताओं को अपनी विरोधी मानसिकता के कारण राष्ट्रीय हित को तिलांजलि दे देनी चाहिये? यह कैसी अज्ञानपूर्ण महत्वाकांक्षा है जो किसी अन्य को राज सत्ता में देखकर वैमनस्यपूर्ण व्यवहार के लिए प्रेरित करती है? अगर ऐसा है तो यह वास्तव में अत्यंत दुःखद है।

संभवतः यह विरोध की नीतियां संप्रग सरकार के पिछले १० वर्षीय कार्यकाल में हुए खरबों के घोटालों के उजागर होने से बचने के लिए भी अपनायी जा रही हो। इसके अतिरिक्त लश्कर-ए-तोईबा की आतंकी

देश-विदेश में अनेक विवादित और हास्यास्पद कथन करने वाले मंदबुद्धि राहुल से यह आशा भी नहीं की जा सकती है कि उन्हें यह ज्ञान होगा कि सुदृढ़ वैज्ञानिक आधार वाली भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के आचरण से जीवन को उत्कृष्ट बनाया जाता है? उनसे भारत राष्ट्र के मान-सम्मान के प्रति कोई आशा करना और भारत को पुनः विश्वगुरु के स्थान पर सुशोभित करवाना संभवतः संभव नहीं होगा? उनको यह भी ज्ञान नहीं है कि भारत की महान संस्कृति की रक्षा में राष्ट्र सेविका समिति की लाखों हिन्दू वीरांगनायें गणवेश धारण करके मां-भारती की सेवा में निरंतर समर्पित रहती हैं। साथ ही पूर्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक की कुछ कुछ तुलना आतंकवादी संगठनों से करके उन्होंने अपनी राष्ट्रभक्ति का खोखला परिचय अवश्य दिया था।

फिर भी मूल बिंदू यह है कि क्या वर्तमान में राहुल गांधी नकारात्मक व द्वेषपूर्ण राजनीति को छोड़कर १२५ करोड़ देशवासियों के हित में कोई सकारात्मक सन्देश देकर अपनी छवि को सुधारने का प्रयास करेंगे? उनको विपक्ष में बैठ कर अपनी स्वस्थ राजनीति का परिचय देकर अभी कुछ और राजनैतिक ज्ञान लेना चाहिये। उन्हें मोदी सरकार के अनावश्यक विरोध की राजनीति को तिलांजलि भी देनी होगी।

यहां मुख्य रूप से यह भी ध्यान रहना चाहिये कि केवल वंशवादी परम्परा ने ही इटालियन भारतीय एंटोनिया माइनो सोनिया गांधी को देश के सबसे पुराने व बड़े राजनैतिक दल कांग्रेस का सर्वोच्च नेता बना दिया। परंतु जब वह अपनी मंडली द्वारा बहुसंख्यकों के प्रति कुटिल

राष्ट्रवादी कांग्रेसियों ने सोनिया को चेतया भी था। यहां यह भी कहना अनुचित नहीं की २००४-२०१४ तक तत्कालीन कांग्रेसनीत संप्रग की केंद्रीय सरकार में भ्रष्टाचार अपने चरम पर था। परंतु प्राचीन उक्ति विनाश काले विपरीत बुद्धि कभी असत्य नहीं होती। परिणामस्वरूप २०१४ के लोकसभा चुनावों में केवल ४४ कांग्रेस सांसद चुने गये।

सोनिया गांधी अपने प्रिय पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाने की चाहत में वर्षों से उसे ही चुनावों की बागडोर सौंपती आ रही है। लेकिन अयोग्य राहुल में ऐसा कोई गुण ही नहीं दिखायी देता जो कांग्रेस का नेतृत्व संभाले और चुनावों में विजय दिलवा सकें? इसीलिये लोकसभा के अतिरिक्त विधानसभाओं के चुनावों में भी कांग्रेस लगभग निरंतर पराजित होती जा रही है। ऐसे में यह अत्यंत दुःखद है कि सोनिया सहित कांग्रेस के प्रथम पंक्ति के नेता भी

टूटा-फूटा सिंहासन सौंपना चाहते हैं। अनेक बार राहुल को कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिये तैयार किये जाने के समाचार आते रहे हैं परंतु न जाने कौन सा भय है जिससे राहुल गांधी स्वयं इस पद से अभी तक दूर रहना चाहते आ रहे हैं। लेकिन अब पुनः यह चर्चा चल रही है कि शीघ्र ही राहुल को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जायेगा। क्या इससे यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि कांग्रेस में योग्य और बुद्धिमान नेताओं का अभाव हो गया है? ऐसी दयनीय स्थिति में कांग्रेसजन एक वंशीय परंपरा को अपना कर उसे ढोने को क्यों विवश हो रहे हैं? क्या यह आधुनिक लोकतान्त्रिक व्यवस्था का खुला उल्लंघन नहीं है? कांग्रेस को अगर इन संकटकालीन परिस्थितियों से बाहर निकलना है और भविष्य में पुनः सफल होना है तो यह अच्छा होगा कि वह अपने संगठन में कुशल व योग्य नेतृत्व के अभाव को दूर करें।

परमार्थ के बीज बोइये

फूल बनकर मुस्कुराना सीखिये
गुणी बनकर गीत गाना सीखिये।
सूर्य के सम चमकना तो है कठिन
दीप बनकर झिलमिलाना सीखिये।
गमों के अति बोझ से घबराओ ना
धर के सम धैर्य रखना सीखिये।
गिले शिकवे छोड़ सभी से प्रेम करो
सभी को अपना बनाना सीखिये।
स्वार्थ के संसार में है सुख कहाँ
परमार्थ के बीज बोना सीखिये।
नफरत की जिन्दगी से घुटन है
प्यार की दौलत लुटाना सीखिये।
कौन जाने किस घड़ी रुक जाये सांस
समय का उपयोग करना सीखिये।
अपने लिए तो हर कोई जीता ही है
पराये हित में भी जीना सीखिये।
खुशी के क्षण स्वयं ही आती हैंसी
दूसरों को भी हँसाना सीखिये।
हुआ नहीं कोई "हरि" जग में अमर
इस सत्य को स्वीकार करना सीखिये।

भारत की स्वतंत्रता का आन्दोलन वास्तव में भारत के आधुनिकीकरण के बड़े आन्दोलन का अंग था। अंग्रेजी राज के कारण भारत के बौद्धिक और शिक्षित वर्ग को पता चला कि यूरोप के देश किस प्रकार विज्ञान और टेक्नोलॉजी के विकास के द्वारा भौतिक समृद्धि और सांस्कृतिक उन्नति की ओर बढ़ रहे हैं। उन्होंने शीघ्र ही समझ लिया कि न्याययुक्त और बुद्धिसंगत समाज व्यवस्था स्थापित करने के लिए पहले स्वतंत्रता और लोकतंत्र की स्थापना आवश्यक है, विशेष कर ऐसे देश में जहाँ जनता गरीबी, अज्ञान और दकियानूसी रूढ़ियों से ग्रस्त हो।

आधुनिकता और नई रोशनी की बहुत जरूरत है। परन्तु सदियों के अंधविश्वास और दकियानूसीपन ने हमारा पल्ला नहीं छोड़ा और हमें मालूम है कि देश में सांप्रदायिकता और प्रांतीयता का कितना जोर है। पिछड़ेपन तथा अज्ञान के कारण आज जनता अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी असमर्थ है। हमारी सबसे बड़ी समस्या राष्ट्रीय एकता बनाए रखने की है। ब्रिटिश अधिकारियों का दावा था कि अंग्रेजी राज के कारण ही भारत में एकता स्थापित हो सकी। इस बात से इन्कार करना कठिन है कि अंग्रेजी राज से पहले भारत राजनीतिक रूप से एक नहीं था। साथ ही यह भी सच है कि राष्ट्रीयता का सिद्धान्त भी दो सौ वर्षों से पुराना नहीं। देश में इस समय भाषाओं और प्रदेशों के जो झगड़े मचे हैं और लोकतंत्र की जो दुर्दशा हो रही है, उसे देखकर बड़ी निराशा होती है।

दुःख की बात यह है कि हमारे राजनीतिक दल यह नहीं देख रहे हैं कि उन सबके सामने जो संकट है उसका मुकाबला राष्ट्रीय एकता से ही किया जा सकता है। बाहरी शत्रु के मुकाबले देश के लोग और राजनैतिक दल एक होकर खड़े हो सकते हैं, इसी से हम सन्तुष्ट नहीं रह सकते क्योंकि बाहरी शत्रु से ज्यादा खतरनाक भीतरी शत्रु, फूट और विघटन की शक्तियाँ हैं, जिनसे लड़ने के लिए देश के सभी वर्गों में मजबूत एकता की जरूरत है। देश की एकता के लिए ऐसी ही एक खतरनाक समस्या अल्पसंख्यकों की, खासकर मुसलमानों की है।

सन् १९४६ में हमने अपने कम्युनल ट्रायेंगल (साम्प्रदायिक त्रिकोण) नामक ग्रन्थ में हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर विचार किया था और यह मत प्रकट किया था कि मुख्यतः अंग्रेजी सरकार ही दोनों सम्प्रदायों को एक-दूसरे से लड़ा रही है, परन्तु स्वतंत्रता के सत्तर वर्ष बाद यह कहना पड़ता है कि यदि हमारी यह बात सही होती तो स्वतंत्र भारत में मुस्लिम समाज की समस्या सुलझ गई होती।

लेकिन ऐसा नहीं है। इसलिए हमें प्रसन्नता है कि इस पुस्तक के लेखक (पुस्तक : आधुनिक भारत और इस्लाम, लेखक महेश्वरी अनन्त करंदीकर—मूल ग्रंथ इस्लाम इन इंडियाज ट्रांजिशन टु मोडरनिटी का 'स्वतंत्र भारत' लखनऊ के सम्पादक अशोक जी द्वारा किया हुआ संक्षिप्त रूपान्तर) ने इस समस्या पर बड़ी ईमानदारी और विद्वतापूर्वक फिर से विचार करने का प्रयत्न किया है।

पाकिस्तान की स्थापना अब इतिहास की बात बन चुकी है। यह

आन्दोलन का समर्थन करना।

इस भूल के घातक परिणाम हुए। यह बड़ा ही प्रतिक्रियावादी कदम था। प्रगतिशील मुसलमानों को कदापि खिलाफत का समर्थन नहीं करना चाहिए था। खलीफा के पद को समाप्त करके कमालपाशा ने इसे सिद्ध कर दिया। उसके इस कदम का दुनिया भर के बुद्धिमान मुसलमानों ने स्वागत किया और कमाल पाशा अपने इस कदम में साम्राज्यवाद से लड़ने वाले तरुण मुसलमानों का प्रशंसा पात्र बन गया। कमाल पाशा के नेतृत्व में

और लेनिन का नाम जपती थी और समझती थी कि इतिहास का क्रम आर्थिक शक्तियों से निर्दिष्ट होता है। इसलिए हमारा विचार था कि मुस्लिम जनता को दकियानूसी मुस्लिम लीग और धर्मान्ध मुल्लाओं के प्रभाव से निकलना चाहिए। इसीलिए जवाहरलाल नेहरू का मुस्लिम जनसम्पर्क कार्यक्रम बनाया गया, जिसका उद्देश्य हिन्दू और मुस्लिम सभी शोषित और गरीब लोगों को आर्थिक शोषण से लड़ने के लिए एक मंच पर लाना था।

होता है। यह इस्लाम के दूसरे शानदार उज्ज्वल रूप पर धब्बे की तरह है। इस्लाम का यह रूप ज्यादा उदार है और पैगम्बर की इस नसीहत से प्रेरित है कि 'इल्म की खोज में चीन तक जाओ' और 'लेख की स्याही में शहीद के खून से ज्यादा ताकत है।' इस्लाम की इस दूसरी धारा ने यूनान और रोम के ज्ञान को ग्रहण किया और अटलांटिक के तट पर स्पेन तक फैला तथा ईसाई संस्कृति से बहुत कुछ लिया और उसे दिया।

दूसरी प्रवृत्ति भारत में भी दिखाई पड़ती है, जब हिन्दू पण्डित और मुसलमान सूफी ने साथ मिलकर आत्मा के रहस्य की खोज की और अद्वैत तथा इस्लामी एकेश्वरवाद में निहित एक ही आध्यात्मिक तत्त्व का अनुभव किया। कबीर तथा दादू ने इसी एकता का उपदेश दिया। हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में हिन्दू और फारसी संस्कृति के इसी संगम का दर्शन होता है। अकबर इस संस्कृति का पैगम्बर था और वह अकेला न था। इसी कारण सुदूर दक्षिण में, बंगाल में, सिन्ध में, हिन्दू और मुसलमान सदियों तक मिलकर शान्ति और प्रेम से रह सके। वास्तव में इस्लाम का प्रवेश भारत में एक ही स्रोत से नहीं हुआ। अलग-अलग समय और स्थान पर, अनेक रूप में, अनेक जातियों और फिरकों द्वारा भारत में इस्लाम का प्रवर्तन हुआ। इस्लाम को भारत में लाने वाले भिन्न-भिन्न नस्लों और जातियों के थे और वे अपने साथ मुसलमानी मजहब के अलावा और तत्त्व भी लाए।

इस्लाम में जिस प्रकार अनेक मत या फिरके चले, उसी प्रकार उसमें अनेक तरह की सियासतें या राजनीतिक पद्धतियाँ भी मिलती हैं। यह समझना भूल है कि भारतीय मुसलमानों का इस्लाम एक ही तरह का है। भारत में आने वाली भिन्न-भिन्न मुसलमान जातियों के मजहब पर उनकी जाति की अपनी-अपनी छाप है। तुर्की का इस्लाम, अरबी और अफगानी इस्लाम से काफी भिन्न है। मुसलमानों पर अपने चारों ओर के सांस्कृतिक परिवेश का भी असर पड़ा। फारस को प्रभावित किया। भारतीय इस्लाम एक ऐसी माला है, जिसमें मजहब के धागे में जाति, संस्कृति और राजनीति में मोती पिरोए हुए हैं। (पर्सिवल स्पीयर—द-पॉजिशन ऑफ मुस्लिम बिफोर एंड आफ्टर द पार्टिशन)।

उक्त उद्धरण में जो बात संक्षेप में कही गई है उसी को इस पुस्तक में बड़ी लगन और विद्वत्ता से बताया गया है। इस अध्ययन से एक और बात निकलती है कि हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई प्रत्येक धर्म का देश काल से एक सम्बन्ध है। साथ ही उसमें

आधुनिक भारत और इस्लाम

स्व. अच्युत पटवर्धन

इतिहास दुःखद है, पर इससे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। मुस्लिम बहुल प्रान्तों की समस्या उन प्रान्तों से बहुत भिन्न थी, जहाँ उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी। यह इतिहास की एक विडम्बना है कि पाकिस्तान की स्थापना उत्तरप्रदेश, बिहार, मुम्बई आदि के इन्हीं अल्पसंख्यकों मुसलमानों के बल पर हो सकी।... अस्तु, पाकिस्तान की स्थापना से हिन्दू-मुस्लिम समस्या का एक अध्याय समाप्त होता है और विभाजन के बाद की स्थिति में इस समस्या का नए सिरे से अध्ययन

होने वाले तुर्की के इन्कलाब के सबसे पहले प्रशंसकों में मौ. अब्दुलकलाम आजाद भी थे। एक तो खिलाफत का आन्दोलन खुद एक प्रतिक्रियावादी चीज थी, दूसरे इसमें पड़ने से गाँधी जी को कट्टर रूढ़िवादी मौलानाओं और मौलवियों का साथ देना पड़ा। इस प्रकार वह अनजाने में ही भारत के मुसलमानों में बुद्धिमान, नई रोशनी के उदार नेतृत्व के उदय में बाधक और उन्हें कट्टर मुल्लाशाही की गोद में ढकेलने में सहायक सिद्ध हुए।

मौलाना मुहम्मद अली के



करना जरूरी है।

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या देश का बंटवारा अनिवार्य था?? राजनीति के विद्यार्थी के लिए यह विचार करना बड़ा लाभदायक होगा कि देश की अखण्डता क्यों नहीं कायम रह सकी?.... इतने दिन बीत जाने के बाद अब उन घटनाओं पर तटस्थ दृष्टि से विचार किया जा सकता है और यह पूछा जा सकता है कि भारत में राष्ट्रीयता के विकास में क्या दोष आ गया? क्यों मुसलमानों में इतनी अराष्ट्रीयता आई कि वे देश के विभाजन पर तुल गए? मेरा ऐसा विचार है कि सन् १९४७ में किसी न किसी तरह का देश का विभाजन हो गया था, मगर हमें देखना चाहिए कि इसमें हमारा कितना दोष था। स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रम पर दृष्टिपात करने में मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि गाँधी जी की 'हिमालयाकार भूल' थी खिलाफत के

उस समय के भाषण, आज की बुद्धि के विरुद्ध और आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राज्य के विचार के विपरीत जान पड़ते हैं। जहाँ कांग्रेस के आन्दोलन से हिन्दुओं में धार्मिक सुधार और उदारता की लहर आई और बुद्धिवाद को बढ़ावा मिला, वहीं खिलाफत को शह देकर उसने मुसलमानों के कठमुल्लापन—कट्टरता और धर्मान्धता को प्रोत्साहन दिया। जिन्ना जैसे बुद्धिवादी मुसलमान नेता इससे विरक्त हुए। कांग्रेस और मुस्लिम लीग में विरोध की जड़ में वही बात थी। बीती हुई बातों पर विचार करने से एक और गलती को स्वीकारना होगा। पं. जवाहरलाल नेहरू और नौजवान कांग्रेसजन (जिनमें इन पंक्तियों का लेखक और उसके समाजवादी साथी भी थे।) यह समझते थे कि प्रदेश और संप्रदाय के झगड़े, असली और बुनियादी वर्ग—संघर्ष के सामने दब जाएँगे। हमारी पीढ़ी मार्क्स

मजहबी झगड़ों को मिटाने का सबसे अच्छा उपाय हमें यह लगा कि जमींदारी उन्मूलन और समाजवादी कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जाए, परन्तु यह उपाय भी कारगर न हुआ। आज यह स्वीकार करना पड़ता है कि सम्प्रदाय, जाति, प्रान्त और भाषा की भावना बड़ी प्रबल और देश की एकता में बाधक है। इन्हीं दो गलत नीतियों—संप्रदाय के बजाए वर्ग की भावना को ज्यादा महत्त्व देने और पुरातनपंथी मुस्लिम मुल्लाओं का समर्थन करने के कारण, मुसलमानों में प्रगतिशील और आधुनिकतावादी नेतृत्व के उदय में बाधा पड़ी। यह सही है कि इस प्रकार के लोग मुसलमानों में उतने नहीं जितने हिन्दू, पारसी और ईसाई समाजों में हैं। मुसलमानों में भी ऐसे लोग हैं, लेकिन मजहबी जोश के आगे उनकी कुछ नहीं चलती और मुस्लिम समाज में इतने वर्षों में भी बुद्धिवाद की कोई प्रगति नहीं हो सकी है।

इस पुस्तक में इस समस्या पर एक नई दृष्टि से विचार किया गया है। इसके पहले भाग में इस्लाम के उदय और विकास की कहानी है। यह कुरान शरीफ और खिलाफत के इतिहास के गहरे अध्ययन पर आधारित है। इसमें तथ्य दिए गए हैं और इतिहास की कोई तोड़-मरोड़ नहीं की गई है। विश्व की एक शक्ति के रूप में इस्लाम के विकास की सभी प्रवृत्तियों का इसमें उल्लेख है। इसमें यह लक्षित होता है कि अन्य मजहबों की तरह इस्लाम के विकास की भी दो स्पष्ट धाराएँ रही हैं। एक में वह बुतपरस्ती और अंधविश्वास तथा अरब के सूखे रेगिस्तान में पला, कट्टर लड़ाकू मजहब है। इस रूप में इसमें रेगिस्तान की निर्ममता, संकीर्णता, असहिष्णुता और मजहबी कट्टरता है। यह रूप इस्लाम के इतिहास में और भारत पर इस्लाम के आधिपत्य में, महमूद गजनवी की खुरेजी से लेकर औरंगजेब के अत्याचारों में लक्षित

आखिर हम सच स्वीकार करने से कब तक मुँह चुराते रहेंगे?

आतंक के खिलाफ जंग में 8.3 ट्रिलियन डॉलर खर्च किये जा चुके हैं, लेकिन नतीजा क्या हासिल हुआ? इस्लामी आतंकवाद का सांप तो मरा नहीं, लाठी टूट

काफिरों से नफरत और इस्लामी व्यवस्था लागू करने के लिए संघर्ष करने वाला हिंसक आन्दोलन है। इसलिए जब तक इस्लाम नहीं बदलता तब तक वह सोच भी नहीं बदलने वाली। आतंकवाद की विषबेल को खत्म ही करना चाहते हैं तो उग्रवादी इस्लाम की

की राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार हिलेरी क्लिंटन भी नहीं मानती कि लड़ाई उग्रवादी इस्लाम से है। कोई भी इस लड़ाई को उग्रवादी इस्लाम से नहीं जोड़ना चाहता। आतंकवाद को खत्म करना है तो उग्रवादी इस्लाम से लड़ना ही होगा। भारत भी उसी पलायनवादी प्रवृत्ति

के तमाम देश अपने दुश्मन की सही पहचान नहीं करेंगे तो उससे लड़ेंगे कैसे?

इस्लामी आतंकवाद अब दुनिया भर में फैला जा रहा है, सारी दुनिया इसका शिकार बन रही है। आईएस बहुचर्चित भले ही हो, लेकिन उससे भी खूबवार

धार्मिक ग्रंथ ही पढ़ाये जाते हैं। इस्लामी आतंकवादी की दारुण त्रासदी यह है कि आतंकवादी वारदात करने वाले भी मुस्लिम होते हैं और उसके सबसे ज्यादा शिकार भी मुस्लिम ही होते हैं। इससे इन दिनों काफिर कम और मुसलमान ही ज्यादा मर रहे हैं।

विश्वव्यापी आतंकवाद को खत्म करने के लिए उग्रवादी सोच से लड़ना होगा

प्रो० ए०पी० सारस्वत

गई। इस्लामी आतंकवाद खत्म होने के बजाए बढ़ता ही जा रहा है, अब उसने वैश्विक रूप ले लिया है। इस्लामी आतंकवाद दुनिया के इतने देशों में फैल चुका है कि इससे आतंकवाद खत्म नहीं होने वाला क्योंकि—इस्लामी आतंकवाद इस्लाम के सिद्धांतों पर आधारित गैर—मुस्लिमों या

विचारधारा से ही मुकाबला करना पड़ेगा।

लेकिन इस मुद्दे पर दुनिया के बड़े देश एकजुट नहीं हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा कह चुके हैं कि आईएस तो गैर—इस्लामिक संगठन है, उसका इस्लाम से कोई लेना—देना नहीं है। इसी तरह डेमोक्रेटिक पार्टी

का शिकार है। भारत कहता है कि धर्म और आतंकवाद का कोई रिश्ता नहीं है। इससे बड़ा और कोई झूठ हो नहीं सकता। दुनिया में जो डेढ़ सौ से ज्यादा आतंकी संगठन हैं, वे यूं ही नहीं कह रहे हैं कि वे इस्लाम के लिए, इस्लामी व्यवस्था कायम करने के लिए लड़ रहे हैं। यदि भारत और दुनिया



व्रतोत्सव प्रदर्शिका

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष

व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव)	तिथि	वार	दिनांक
❖ इष्टिः, मल्लारी भैरवषट्त्रात्र प्रारम्भ (महा०), इन्दिरागांधी जयन्ती	१	रविवार	१६.११.२०१७
❖ चन्द्रदर्शन मु० १५, उत्सवदिवस	२	सोमवार	२०.११.२०१७
❖ रविउलअवल ३, रवि योग २७/५० से	३	मंगलवार	२१.११.२०१७
❖ भद्रा १३:३४ से २६:५५ तक, वैनायिकी चतुर्थीव्रत, राष्ट्रियमार्गशीर्ष प्रारम्भ, २०यो०	४	बुधवार	२२.११.२०१७
❖ श्रीराम जानकीविवाहोत्सव, बिहारी पंचमी ५०७ वाँ, श्रीबांकेबिहारी प्राकट्योत्सव, बाबासत्यसाई जयन्ती, २० यो० ०६:५६ तक	५	वीरवार	२३.११.२०१७
❖ स्कन्दषष्ठी, चम्पाषष्ठी व्रत, (महा०) गुहाषष्ठी, मूलकरुपिणीषष्ठी (बं०), रवि योग १०:०२ से गुरुतेगबहादुर बलिदान दिवस, सं०सि०यो० १०:०२ से	६	शुक्रवार	२४.११.२०१७
❖ पंचक प्रा० २५:५५, २० यो० सं० सि० यो० १२:४८ तक	६	शनिवार	२५.११.२०१७
❖ भद्रा ०६:५० से २२:२६ तक, मित्रसप्तमी नरसीमेहता जयन्ती, विष्णु—नन्दा—भद्रासप्तमी, एन० सी० सी० वर्षगाँठ	७	रविवार	२६.११.२०१७
❖ रवि योग १६:३७ से	८	सोमवार	२७.११.२०१७
❖ नन्दिनी नवमी, कल्पादि: जैन दिवाकरचौथ पं० बावलिया पुण्य: (चिड़ावा) रवि योग, सं०सि०यो० १७:२० से	९	मंगलवार	२८.११.२०१७
❖ भद्रा २२:०६ से, दशादित्यव्रत, अमरनाथ जन्म—मोक्ष जैन, २०यो० १७:११ तक	१०	बुधवार	२९.११.२०१७
❖ भद्रा ०६:२६ तक, पंचक समाप्त १६:१२, मोक्षदाएकादशीव्रत सर्वेषाम, श्री गीता जयन्ती ५१५३ वाँ, मौनी एकादशी जैन, श्री घालदास जयन्ती, रामधामखेड़ापा जोधपुर, सं०सि०यो०	११	वीरवार	३०.११.२०१७
❖ प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत पारण ०७:१३ तक, अखण्डाद्वादशी, गुरुग्रन्थोत्सव, त्रयोदशीक्षयः, २०यो० १४:२७ से, सं०सि०यो० १४:२७ तक	१२/१३	शुक्रवार	०१.१२.२०१७
❖ भद्रा २४:५७ से, पिशाचमोचनश्राद्ध, सम्भवनाथ जयन्ती, कपर्दीश्वरयात्रा दर्शन (काशी), बाराबफात (ईद—ए—मिलाद), रवि योग १२:०६ तक	१४	शनिवार	०२.१२.२०१७
❖ भद्रा ११:०७ तक, अन्वा श्रीसत्यनारायणव्रत, पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयन्ती, षोडशीत्रिपुरसुन्दरी, श्री विद्या जयन्ती, अन्नपूर्णा जयन्ती, रोहिणीव्रत, रवि योग ०६:२० तक	१५	रविवार	०३.१२.२०१७

इस्लामी संगठन मौजूद हैं। बोको हराम ने वर्ष २०१४ में आतंकवाद से हुई मौतों के मामले में आईएस को पीछे छोड़ दिया है। पिछले वर्ष बोको हराम के आतंकी हमलों में ६६४४ लोगों की मौत हुई तो आईएस के हमलों में ६०७३ लोगों की। इन दोनों के हमलों में दुनिया में आतंकवाद से हुई कुल मौतों में से ५१ प्रतिशत मौतें हुई। दुनिया में कुल ५३० आतंकवादी संगठन हैं, जिनमें से ३३ तो पिछले साल ही बने हैं।

पहले ५ आतंकी संगठनों में से सभी संगठन इस्लामी संगठन ही हैं। लगभग ८० से ८५ प्रतिशत वारदातें इस्लामी संगठनों की ओर से हो रही हैं। लोग भले ही कहते हों कि धर्म और आतंकवाद का कोई रिश्ता नहीं है, लेकिन आकड़े बताते हैं कि इन दिनों आतंक पर इस्लाम का एकाधिकार हो गया है। हालांकि इस्लाम के किसी ग्रंथ में आतंकवाद का समर्थन नहीं किया गया है, मगर काफिरों से संघर्ष करने की बात १०० से ज्यादा जगह कही गयी है। यही सोच इस्लामी आतंकवाद का कारण बनती है। वे मदरसे भी आतंकवाद की जन्मस्थली बनते हैं जहां असहिष्णुता की शिक्षा देने वाले

ज्यादातर इस्लामी आतंकी संगठन उन मुस्लिमों को भी निशाना बनाते हैं, जिनके बारे में उनका ख्याल है कि वे इस्लाम के रास्ते पर नहीं चल रहे हैं। तालिबान और बोको हराम का निशाना वो मुस्लिम भी बन रहे हैं, जिन्हें वे पथभ्रष्ट मुस्लिम मानते हैं। इतनी बड़ी संख्या में इस्लामी आतंकी समूहों का होना इस बात का प्रतीक है कि—ये संगठन तो किसी गहरी बीमारी के प्रतीक भर हैं। इस समस्या की जड़ में है—“गैर—मुसलमानों के विरुद्ध सशस्त्र इस्लामी जिहाद करने की सीख। दुनिया को मोमिन और काफिर, अल्लाह और शैतान अथवा दारुल हरब और दारुल इस्लाम में बांटकर देखने की प्रवृत्ति।” दुनिया में जहां—जहां जिहादी आतंकवाद सिर उठा रहा है, वहां की मूल समस्या यही है। ये राजनैतिक इस्लाम है जिसका मूल तत्व सारी दुनिया को एक इस्लामी झंडे के तले लाना है। इसका उद्देश्य एक ऐसी दुनिया बनाना है जहां इस्लाम के अलावा किसी ओर चीज को मान्यता नहीं होगी। इस्लामी समाजों के लोग अपने उलेमाओं, मजहबी संस्थानों के शिकंजे

भारत एक प्रजातन्त्रीय देश है जिसके नागरिकों को अनेक प्रकार की स्वतंत्रता और अधिकार संविधान के अंतर्गत दिए गए हैं। प्राप्त अधिकारों व स्वतंत्रता के साथ ही संवैधानिक रूप से कुछ कर्तव्यों और अवश्य पालनीय सामाजिक नियमों के मानने का निर्देश में संविधान में निहित है। अधिकार और कर्तव्य का जब तक ईमानदारी से पालन होता है, किसी की उपेक्षा या स्वतंत्रता के नाम पर शोषण अतिक्रमण नहीं होता है तब तक ही किसी राष्ट्र की व्यवस्था व्यवस्थित रह सकती है। व्यक्ति व किसी भी संगठन से बड़ा राष्ट्र होता है। "राष्ट्र प्राणों से बड़ा होता है, हम मिटते हैं तो राष्ट्र खड़ा होता है।" शास्त्रों ने, विद्वानों ने धर्म की ५ प्रकार से व्याख्या की है। व्यक्तिगत धर्म, पारिवारिक धर्म, सामाजिक धर्म, राष्ट्रीय धर्म, वैश्विक धर्म। इसलिए व्यक्तिगत धर्म से बड़ा राष्ट्रीय धर्म होता है। यही राष्ट्रीय धर्म प्रत्येक नागरिक के लिए सर्वोपरि है और होना भी चाहिए।

किन्तु अतीत साक्षी है प्रजातंत्र के इस देश में महत्वाकांक्षी विचारों वाली राजनीति ने संविधान के आदर्शों, उसकी मान्यताओं को, मानवीय, राष्ट्रीय अधिकारों की अवहेलना करने वाले व्यक्तियों का पोषण,

और राष्ट्रीयता का शोषण किया है। अपने स्वार्थ में मजहबी विचार धाराओं को आश्रय देकर उनकी अनुचित मांगों व कर्तव्यों को मात्र अपना समर्थन जुटाने में वे उचित,



अनुचित सब मान्य कर रहे। इसका लाभ उठाते हुए जब किसी को कोई बात मनवानी हो तो उसके पक्ष में धर्म रूपी शस्त्र काम आता है। किसी बात को मानने या किसी को न मानने में दलील देकर, धर्म की दुहाई देकर सबको चुप करवा दिया जाता है। इस प्रकार स्वार्थ जहाँ आता है, वहाँ अपनी बात को धर्म के नाम पर भुनाने का हथकंडा वर्षों से चल रहा है। इसी साम्प्रदायिकता का और तुष्टिकरण का ही परिणाम पाकिस्तान का जन्म है। जिस माटी में पले-बड़े हुए उस माटी से अपने मजहब या धर्म को राष्ट्र से बड़ा बताकर कोई भी कार्य को महत्त्व

देना सरासर गलत है।

आज देश की जनसंख्या बेहिसाब बढ़ती जा रही है, देश का एक तबका संतान वृद्धि की उपेक्षा कर तेजी से देश की व्यवस्था को बिगाड़ रहा है। देश की आर्थिक स्थिति, बेरोजगारी, आवास व्यवस्था, खाद्यान्न व्यवस्था सबको प्रभावित कर राष्ट्र हित के विरुद्ध कार्य कर रहा है। जबकि शासन छोटे परिवार के नाम पर अनेक प्रकार के प्रयत्न करता है। किन्तु वही सब कुछ हो धर्म के नाम पर कुछ विचारधारा द्वारा राष्ट्र की उपेक्षा की जा रही है। क्या यह मजहबी धर्म की आड़ में राष्ट्रीय धर्म की उपेक्षा और असहयोग नहीं

धर्म के नाम पर अधर्म क्यों?

प्रकाश आर्य

हो रहा है? क्या अपनी भावनाओं के कारण राष्ट्र की करोड़ों जनता की समस्याओं को कुचलते हुए राष्ट्र को क्षति पहुँचाना क्या धर्म है? हाल ही में सोनू निगम ने मस्जिद से माईक पर आने वाली आवाज के सम्बन्ध में आपत्ति उठाई। इस पर तरह-तरह की चर्चा और विवाद खड़ा हो गया। उसकी पीड़ा जो करोड़ों-करोड़ों भारतीयों की है, कोई उस सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहता है। अन्यान्य कारणों से इस प्रकार से होने वाले उस सामाजिक कष्ट को अनदेखा कर कोई सही कहना नहीं चाहता।

यह सरासर धर्म के नाम पर अधर्म है, इस्लाम परमात्मा को साकार नहीं मानता है। फिर वह अजान से आवाज देकर किसको सुनाना चाहते हैं? वैसे भी धर्म प्रदर्शन का विषय नहीं, मात्र बोलचाल का नहीं है, वह तो आन्तरिक विषय व मौन कर्म है। धर्म आचरण का विषय है "धारणात्मक इत्याहुः" जो धारण किया जावे, वह धर्म है। प्रदर्शन या मात्र बाहरी चर्चा धर्म का विषय नहीं, वह तो आत्मा का आन्तरिक और शान्त प्रयास है। परमात्मा की उपासना, प्रार्थना, शान्त चित्त से, एकाग्र मन से की जाती है। भारत में प्रत्येक को अपनी धार्मिक मान्यता को करने की स्वतंत्रता है। परन्तु धर्म यह नहीं कहता कि अपनी मान्यता के लिए किसी दूसरे को परेशान करना चाहिए। यह धर्म नहीं अधर्म है। धर्म कहता है "आत्मानः प्रतिकूलानी परेषां न समाचरेत्।" अर्थात् हम दूसरे से अपनी आत्मा के समान व्यवहार करें। जो अपनी आत्मा को अच्छा लगता है वैसा व्यवहार दूसरों से करें। जो व्यवहार अपने को अच्छा नहीं लगता वह व्यवहार हम दूसरों से न करें।

अजान देना है तो देवें इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। किन्तु यह नहीं होना चाहिए कि बड़ी ऊँची आवाज में कानों को कष्ट देती आवाज में अजान जो औरों के लिए उपयोगी नहीं है कष्टदायी है, वह करना ही धर्म है। विशेषकर सुबह ५ बजे, ४.३० बजे होने वाली अजान से अनेक व्यक्ति प्रभावित होते हैं।

कई व्यक्ति बीमारी से जूझ रहे हैं, उन्हें डॉक्टर ने आराम की सलाह दी होती है। रात में नींद नहीं आती, नींद की दवा, गोली लेकर सोते हैं जब सुबह-सुबह नींद आती है, तो अजान से बीच में नींद खुल जाती है। यह उनके लिए कष्ट का कारण है। बीमार व्यक्ति को पूर्ण आराम की आवश्यकता होती है, उसके अभाव में वह कभी स्वस्थ हो ही नहीं पायेगा, ऐसा विघ्नकारी कर्म धर्म नहीं है।

कोई व्यक्ति मेहनत, मजदूरी करके काम से लौटकर देर रात में सोता है, सुबह फिर काम करने जाता है, शरीर को आराम जरूरी है अन्यथा उस पर बुरा असर होगा। पर अजान की आवाज उसे समय से पहले उठा देती है। कोई विद्यार्थी दिन के अशांत चिल्ला-पुकार के वातावरण के स्थान पर शान्ति से देर रात को पढ़ाई करके सोता है, किन्तु अजान से उसे बीच में उठना पड़ता है, नींद पूरी नहीं होती है। इसका स्वास्थ्य व मस्तिष्क पर गलत प्रभाव होता है, यह सब क्या है?

पहले बिना माईक के भी अजान होती थी। सुबह की अजान एक साथ व कुछ समय के लिए होती थी। अब एक शहर में जहाँ कई मस्जिदें हैं अब वहाँ से लम्बे समय तक और अलग-अलग समय में होती हैं। यह क्यों है? यह जानबूझकर अपनी साम्प्रदायिक विचारधारा का प्रभाव बढ़ाने की योजना है। क्या इस प्रकार की शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना धर्म है? जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और वैसे ही ध्वनि प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, सामाजिक अव्यवस्था है, शासकीय नियम उपनियमों की सर्रास उपेक्षा है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी इस प्रकार के प्रदूषण को अनुचित बताया है। इस प्रकार इन समस्त बातों को ध्यान में रखकर इस प्रवृत्ति पर चिन्तन करना चाहिए। बुराई किसी धर्म, सम्प्रदाय तक सीमित नहीं, बुराई तो बुराई है। यहाँ एक बात और इसी सन्दर्भ में जोड़ना चाहता हूँ। यह केवल अजान तक ही ध्वनि प्रदूषण नहीं है, देर रात तक अन्य धार्मिक शेष पृष्ठ 10 पर

महर्षि दयानन्द और याज्ञिक परम्परा

यज्ञ शब्द 'यज' धातु से निष्पन्न होता है और उसके देवपूजा, संगतीकरण और दान ये तीन अर्थ होते हैं, जो इस शब्द में अन्तर्निहित हैं। तीनों शब्द बहुत अधिक व्यापक अर्थों और भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। महर्षि ने केवल होम करने को ही यज्ञ नहीं माना है अपितु कहा है कि मनुष्यों को चाहिए कि संसार के उपकार के लिए जैसे विद्वान लोग अग्निहोत्र यज्ञ का आचरण करते हैं, वैसे अनुष्ठान करें। सायणाचार्य आदि भाष्यकारों का विचार था कि वेद में वर्णित अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र आदि कल्पित स्वर्ग में रहने वाले देवता हैं। ये देवता पृथ्वी पर दिखाई देने वाले अग्नि, वायु और जलादि पदार्थों का और आकाश में दिखाई देने वाले सूर्य, चन्द्रमा और उषा आदि के अधिष्ठात्री देवता माने जाते हैं। इस प्रकार से इन देवताओं के दो प्रकार के स्वरूप हो जाते हैं। एक स्वरूप अग्नि, जल, वायु आदि के रूप में जड़ पदार्थ के रूप में रहता है और दूसरा स्वरूप अधिष्ठात्री देवता के रूप में मनुष्यों की भाँति प्राणधारी व चेतनायुक्त शरीर के रूप में रहता है। इन अधिष्ठात्री देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञों में इनसे सम्बन्धित मंत्रों की आहुतियाँ दी जाती हैं। यह माना जाता है कि ये देवता अदृश्य रूप धारण करके यज्ञ में उपस्थित होकर इन पदार्थों का भक्षण करते हैं। वेदमंत्रों के रूप में अपनी स्तुतियों को सुनकर ये प्रसन्न हो जाते हैं और यजमान की उस कामना जिसके लिए यज्ञ किया गया है, पूर्ण करते हैं। यह भी माना जाता था कि इन यज्ञ-योग करने वालों को मरणोपरान्त स्वर्ग में भी भेज देते थे। स्वर्ग में इन्हें देवताओं की भाँति ही सुखभोग प्राप्त होते थे। महर्षि ने आर्यों उद्देश्य रत्न माला में यज्ञ की परिभाषा इस प्रकार की है—'जो अग्निहोत्र से लेके अश्वमेधपर्यन्त, वा जो शिल्पव्यवहार और पदार्थविज्ञान है, जो कि जगत के उपकार के लिए किया जाता है, उसको यज्ञ कहते हैं। महर्षि दयानन्द को अधिष्ठात्री देवों की सत्ता स्वीकार्य न थी। उनके द्वारा तत्कालीन यज्ञ परम्परा का घोर विरोध किया गया। अपने वेदभाष्य व सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने देवतावाची पदों का सही अर्थ प्रस्तुत किया। चारों वेदों का अध्ययन करने पर कहीं पर भी ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है कि अग्नि, वायु, जल, आदि जड़ पदार्थों के मनुष्य जैसे शरीर धारी चेतन अधिष्ठात्री देवता भी पाये गये हों। इस प्रकार पारम्परिक यज्ञकर्ताओं की यह धारणा कि यज्ञों में मंत्रों के द्वारा देवताओं को आहूत करने पर वे आकर हवि का भक्षण करते हैं और इस कृत्य से प्रसन्न होकर यज्ञकर्ता का कल्याण करते हैं, वेद के प्रतिकूल है। महर्षि के अनुसार यज्ञों का वास्तविक प्रयोजन यह है कि सुगन्धआदियुक्त द्रव्य अग्नि में डाला जाता है, उसके अणु अलग-अलग होके आकाश में रहते ही हैं, क्योंकि किसी द्रव्य का वस्तुता से अभाव नहीं होता। फिर उससे वायु और वृष्टिजल की शुद्धि होने से जगत् का बड़ा उपकार और सुख अवश्य होता है। इस कारण से यज्ञ करना चाहिए। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून द्वारा स्वामी चितेश्वरानन्द जी के मार्गदर्शन में १ फरवरी से १२ मार्च २०१७ तक ब्रह्म पारायण यज्ञ एवं योग-साधना का विशेष आयोजन किया गया, अतः यह अंक यज्ञ और योग विशेषांक के रूप में सुधि पाठकों को समर्पित है।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,

माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।

साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : घोषित अपराधियों, भ्रष्टचारियों, आतंकियों के आकाओं आदि की सुरक्षा वापस लेने की मांग।

महोदय,

कांग्रेसी शासन काल में बड़ी निंदनीय परिपाटी का आविष्कार किया गया जान के खतरे का बहाना बनाकर आर्थिक अपराधियों, राष्ट्रद्रोहियों व भ्रष्टाचारियों को कमांडो की सुरक्षा प्रदान कर दी गई। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। और आज भी उस परिपाटी के तहत उन लोगों को कमांडो की सुरक्षा मिली हुई है और वे सीना तान कर अकड़ते हुए घूमते हैं। इस प्रकार जनता-जनार्दन के पैसे से गुलछरें उड़ाते हुए भोली भाली जनता को ठगा दिखाते हैं। हाल ही में बिहार में ऐसे रोमांचक दृश्य देखने को प्रतिदिन मिल रहे हैं। देश के अधिकांश भले लोगों की छाती पर मूंग दल रहे हैं। चारा घोटाले में पांच वर्ष की सजा पाए एक व्यक्ति उच्चतम न्यायालय से न जाने किस प्रकार पांच वर्ष की जमानत लेकर धड़ल्ले से सीना तान कर कमांडो घेरे में घूम रहा है। यह देखकर दुनियां भी आश्चर्यकित होगी कि अपराधीगण कमांडो की सुरक्षा के घेरे में जनता को मुंह चिढ़ा रहे हैं। किन्तु आश्चर्य है कि देश की सरकार इस अनीति पर कोई गौर नहीं कर रही है कि अपराधी जान को खतरा बताकर कमांडो की सुरक्षा में कैसे मस्ती कूट रहे हैं। अनेक घोटालों के बड़े-बड़े ये लम्बरदार कमांडो के बीच में सीना तानकर मोदी सरकार को उखाड़ने के लिये दम भर रहे हैं। देश के टुकड़े करने, आतंकवाद को बढ़ावा देनेवाले तथा देश में सांप्रदायिकता बढ़ाने वालों पर केन्द्र व राज्य सरकार सुरक्षा के नाम पर करोड़ों खर्च कर रही है। जम्मू-कश्मीर के अलगाववादियों, हुरियत नेताओं आदि पर बड़ी रकम खर्च की जा रही है। यह राष्ट्रहित में नहीं है। ये लोग कमांडो की सुरक्षा के घेरे में कैसे हैं? इनकी सुरक्षा वापस क्यों नहीं ली जा रही है। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,

श्री आदित्यनाथ योगी जी,

माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश।

विषय : गौतमबुद्ध नगर जिला के नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा शहर से बांग्लादेशियों को वापस भेजने तथा नोएडा शहर के सेक्टर-७८ में उत्पात मचाने वाले बांग्लादेशियों पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग।

महोदय,

आपको ज्ञात हो कि गौतमबुद्धनगर जिला के प्रमुख औद्योगिक शहर नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा में बांग्लादेशी मजदूरों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। नोएडा के सेक्टर-७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, सहित नवनिर्मित सेक्टरों में बिल्डर साइटों पर हजारों बांग्लादेशी मजदूरों ने झुग्गियां बना ली हैं। बांग्लादेशी पुरुष निर्माण कार्यों में मजदूरी करता है तथा महिलाएं घरों में नौकरानी के रूप में कार्य करती हैं। मजदूरी करने के साथ-साथ बांग्लादेशी पुरुष व महिलाएं घरों में चोरी करने, छीना-झपटी करने के अलावा कई आपराधिक घटनाओं को अंजाम देता है। इनकी बढ़ती संख्या के कारण नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा औद्योगिक शहर एक आपराधिक शहर बनते जा रहा है।

दिनांक: १२.०७.२०१७ को लगभग ५०० की संख्या में बांग्लादेशी मजदूरों ने सेक्टर-७८ के महागुन माडर्न सोसाइटी के एक घर पर धावा बोल दिया तथा घर में तोड़-फोड़ किया। यदि घर में रहने वाले लोग छिपते नहीं तो परिवार के सदस्यों की हत्या हो जाती। हमलावरों ने सेक्टर में जबरदस्त हंगामा किया तथा सेक्टरवासियों में आतंक पैदा किया। कृपया नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा औद्योगिक शहर को अपराध एवं

आतंक से बचाने के लिये निम्नलिखित कार्यवाही करने की कृपा करें:-

१. सेक्टर-७८ के महागुन माडर्न सोसाइटी के लैट में हमला करने वाले व उत्पात मचाने वाले सभी बांग्लादेशी मजदूरों पर कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाये। दोषियों पर मुकदमा दर्ज कर जेल भेजा जाये।
२. नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा शहर में रहने वाले बांग्लादेशियों की पहचान की जाये तथा उसे वापस बांग्लादेश भेजा जाये।
३. कई बांग्लादेशियों ने फर्जी तरीके से पश्चिमबंगाल तथा असम का फोटो पहचान पत्र बना रखा है। इसकी जांच खुफिया एजेंसियों तथा पुलिस से करायी जाये तथा दोषियों पर कड़ी कार्रवाई हो।
४. बिना पुलिस सत्यापन कराये नौकर, नौकरानी, सुरक्षा गार्ड रखने पर रोक लगाया जाये तथा बिना सत्यापन कराये ऐसे कर्मियों को रखवाने वाले एजेंसियों, सुरक्षा एजेंसियों पर कानूनी कार्यवाही हो।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 9 का धर्म के नाम पर अधर्म.....

कार्यक्रमों में, विवाह आदि के अवसर पर बड़े-बड़े डी.जे., तेज आवाज में स्पीकर बजाना भी अनुचित है। इस पर भी नियंत्रण होना चाहिए, डी.जे. की भारी भरकम आवाज हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को या किसी भी बीमारी से जूझ रहे व्यक्ति के लिए बहुत कष्टदायक होता है। ऐसे भजन, गीत, सूचनाएँ मनोरंजन के स्थान पर कष्ट पहुँचाते हैं और पीड़ित व्यक्ति उनको कोसते हैं।

अज्ञान का विरोध नहीं है, किन्तु अपनी विचारधारा के लिए दूसरों को प्रताड़ित नहीं करना चाहिए। कम से कम सुबह की अज्ञान का समय व ध्वनि पर नियन्त्रण करना नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार एक ही देश में सिक्के दो दोनों पहलू पर अपनी ही जीत वाली स्थिति ठीक नहीं है। एक ओर दूसरी विचारधारा को तो हम नहीं मानेंगे किन्तु हमारी विचारधारा को हम जबरन दूसरों पर थोपें। यह कितना अव्यावहारिक व तथ्यहीन व्यवहार है। गाय को हिन्दू समाज पूज्य मानता है किन्तु अन्य मजहबी विचारधाराएँ हिन्दुओं की इस पवित्र भावना की सरासर उपेक्षा कर रही हैं। क्या एक राष्ट्र में ऐसा व्यवहार उचित है? अज्ञान कितनी भी जोर से दें या धीमी आवाज में करें क्या अंतर पड़ता है? किन्तु अपनी हठधर्मी, दिखावे से उसे महत्त्व देना एक साम्प्रदायिकता का प्रतीक है। एक अच्छे व्यक्ति, अच्छे समाज और अच्छे राष्ट्र की कल्पना का आधार धर्म है, साम्प्रदायिकता नहीं।

आओ! हम सब प्रतिज्ञा करें

हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू संस्कृति के संरक्षण के लिए भारत में वैधानिक रीति से हिन्दू राज्य स्थापित कर हिन्दू महासभा के ध्येय को साध्य करने के लिए मैं निम्नलिखित उद्देश्य स्वीकृत करता हूँ-

- (1) अखण्ड हिन्दुस्थान की स्थापना (2) देश की संस्कृति तथा परम्परा के आधार पर भारत में विशुद्ध लोक-राज्य का निर्माण (3) विभिन्न जातियों तथा उपजातियों को एक अविच्छिन्न समाज में संगठित करना (4) ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना जिसमें राष्ट्र के सब घटकों के समान अधिकार तथा कर्तव्य होंगे (5) राष्ट्र घटकों के उदात्त गुणों के आधार पर विचार, प्रचार और पूजा की राष्ट्र-धर्म के अनुकूल स्वतन्त्रता का प्रबन्ध करना (6) भारतीय नारी के उदात्त प्राचीन आदर्शों को पुनर्जीवित करके उनकी उन्नति करना। स्त्रियों -बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करना (7) हिन्दुस्थान को सैनिक, राजनीतिक, आर्थिक भौतिक रूप से शक्तिशाली तथा आत्मनिर्भर बनाना (8) सामाजिक असमानता को दूर करना (9) धन के वितरण में प्रचलित अस्वाभिक असमानता को दूर करना (10) देशका शीघ्रतिशीघ्र औद्योगिकरण करना (11) जो लोग हिन्दू धर्म को छोड़ गये हैं उनका तथा अन्य लोगों का हिन्दू समाज में स्वागत करना (12) गौरक्षा करना तथा गौ वध बंद कराना (13) हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी की राष्ट्रलिपि बनाना (14) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा उन्नति के लिए हिन्दुस्थान के हित के अनुकूल मित्रता बढ़ाना (15) भारत को आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक दृष्टि से अच्छा बनाना।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का पाकिस्तान से आए ५१ हिन्दू.....

करने का कार्य तेजी से किया जाएगा। अहीर ने कहा कि शदाणी दरबार महत्वपूर्ण और पवित्र तीर्थ स्थल है, यहां वे बार-बार आते रहेंगे। संतों के बताये मार्ग पर चलने से ही देश प्रगति कर रहा है। मुख्यमंत्री रमन सिंह ने भारतीय नागरिकता प्राप्त करने वाले समस्त नागरिकों को बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि वे समस्त लोग जिन्हें आज नागरिकता प्रदान की गई, उन्हें वर्षों बाद यह सम्मान मिला। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से कहा है कि पाकिस्तान से आये हुए सभी शरणार्थियों को भारत की नागरिकता दी जायें।

शेष पृष्ठ 8 का विश्वव्यापी आतंकवाद को खत्म.....

में, उनकी कैद में हैं। उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने तथा तुलनात्मक रूप से जीवन और विचारों का परखने का अवसर नहीं है। किंतु यदि स्वतंत्र विश्व, गैर-इस्लामी समाज जिहादी राजनीति को डीक-डीक पहचान कर उपाय सोचे तो दिखेगा कि जिहादियों से, उनकी गतिविधि और विचारधारा से खुली, लम्बी लड़ाई की तैयारी करते ही वे कमजोर पड़ने लगेंगे। वे हार नहीं मानेंगे, किंतु हार जायेंगे। उनकी मजहबी मान्यताओं को 'रिलीजियस बिलीफ' या 'भावना' के नाम पर छूट नहीं देंगे, जिनसे जिहादियों को शक्ति मिलती है, तब जिहादियों को अपनी सभी वैचारिक प्रस्थापनाओं का बचाव विचारों से ही करना पड़ेगा। यह उनकी नहीं, उन इस्लामी विचारों की कमजोरी है जिनसे वे परिचालित होते हैं।

आम मुस्लिम भी पूरे विश्व में इस्लामी राज होने, इतिहास, मानवता और शरीयत आदि के बारे में अति संकीर्ण नजरिया रखने और खुद के एकमात्र सही समुदाय होने आदि बुनियादी इस्लामी सिद्धांतों के बारे में भ्रम में ही हैं। उन भ्रमों से ही जिहादियों को शक्ति मिलती है। जब स्वतंत्र विश्व आसान समाधान की दुराशा छोड़कर इस्लामी व्यवहार का विज्ञान समझ लेगा, उसी दिन से जिहादी आतंकवाद का सदा के लिए खात्मा होना आरंभ हो जाएगा।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता**विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं**

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

**केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।**

-: तत्काल ग्राहक बनें :-**सदस्यता शुल्क**

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 1 का पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर.....

भागीदारी के बिना संवाद या वार्ता का कोई मतलब नहीं होगा। भारत ने जम्मू कश्मीर में शांति लाने के मकसद से सोमवार को खुफिया ब्यूरो के पूर्व प्रमुख दिनेश्वर शर्मा को जम्मू कश्मीर में सभी हितधारकों के साथ सतत वार्ता के लिए अपना विशेष प्रतिनिधि नियुक्त किया। शर्मा की नियुक्ति के बारे में एक सवाल पर प्रतिक्रिया देते हुए पाकिस्तान विदेश कार्यालय के प्रवक्ता नफीस जकारिया ने कहा कि कदम ईमानदार और वास्तविक नहीं लग रहा है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की घोषणा एक बार फिर से बल प्रयोग की निरर्थकता और वार्ता की अपरिहार्यता को बयां करती है। उन्होंने कहा हालांकि किसी भी वार्ता प्रक्रिया के मकसद और परिणाम उन्मुखी होने के लिए तीन मुख्य पक्षों भारत, पाकिस्तान और कश्मीरियों को शामिल करना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में हुरियत नेतृत्व की भागीदारी के बिना किसी भी संवाद या वार्ता का कोई मतलब नहीं होगा। प्रवक्ता ने कहा कि नामित वाताकार को कश्मीरी लोगों की ष्छेध आकांक्षाओं को समझने का कार्य दिया गया है। उन्होंने कहा कि समय की मांग है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों और कश्मीरी लोगों की इच्छाओं के मुताबिक जम्मू कश्मीर विवाद को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए वार्ता हो। उन्होंने कहा दक्षिण एशिया में टिकाऊ और सतत शांति और स्थिरता के लिए यह जरूरी है, पाकिस्तान उम्मीद करता है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय ऐसे समाधान में अपनी सही भूमिका निभाएगा। वार्ताकार नियुक्त करने के भारत सरकार के निर्णय का विरोध करने के लिए अखिल भारत हिन्दू महासभा ने पाकिस्तान की निन्दा की है। राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है इसमें हस्तक्षेप करने का पाकिस्तान को कोई अधिकार नहीं है।

शेष पृष्ठ 7 का आधुनिक भारत और इस्लाम.....

एक शाश्वत तत्त्व भी होता है। प्रत्येक धर्म में मानव जीवन के रहस्य को समझने का सच्चा प्रयत्न है, इसलिए जो भी व्यक्ति मनुष्य-जीवन के प्रयोजन को समझना चाहता है, उसके लिए इन धर्मों में सामग्री है। प्रत्येक धर्म अपनी पौराणिक कथाओं के माध्यम से कुछ शाश्वत तत्त्वों का निरूपण करता है। प्रत्येक धर्म की अपनी समाज व्यवस्था होती है। हम प्रत्येक धर्म के अस्थायी सामयिक तत्त्वों को छोटकर उसके स्थायी तत्त्व को अलग कर सकते हैं। जिसे हम आधुनिकता कहते हैं, उसका तत्त्व केवल यह है कि मनुष्य के सारे प्रयत्नों का प्रयोजन मनुष्य की भलाई है। धर्म का प्रयोजन मनुष्य को ऊँचा उठाना है, न कि धार्मिक विधि विधान के नाम पर मनुष्य की बलि चढ़ाना।...

इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि हम मुसलमानों को, दकियानूसी रूढ़ियों को छोड़कर इस्लाम की सच्ची भावना ग्रहण करने को प्रेरित करें। हिन्दुओं के बारे में भी यह बात लागू होती है। हिन्दू की विधि और मुसलमानों की शरीया दोनों समय से पिछड़ गए हैं और आधुनिकता की प्रगति में बाधक हैं। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में समाज की धारणा बदली है। इस पर संयुक्त राष्ट्रों के मानव अधिकार की घोषणा का प्रभाव है। भारत में इस पर हमारे संविधान के मौलिक अधिकारों और निदेशक सिद्धान्तों का भी गहरा प्रभाव पड़ा है। इसमें स्त्रियों को पूरी समानता दी गई है। यह धर्म की सच्ची भावना के पूरी तरह अनुकूल है, क्योंकि इसका उद्देश्य मनुष्यता की प्रतिष्ठा है। हिन्दू और मुसलमान दोनों को मनुष्यता की इस भावना का आदर करना चाहिए।

पुस्तक के दूसरे भाग में जो विश्लेषण किया गया है उसमें हिन्दू, पारसी आदि अन्य सम्प्रदायों के आधुनिक विचार वाले युवकों को सोचने-विचारने का मसाला मिलेगा। पुस्तक के अंत में आशा की गई है कि भारत में ऐसे युवक-युवतियों की कमी न होगी जो पुरानी दकियानूसी विचारों से पल्ला छुड़ा सकेंगे। लेखक ने मुझे यह प्राक्कथन लिखने का निमंत्रण दिया इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। हमारी पुस्तक 'कम्यूनल ट्रायंगल' में हिन्दू-मुस्लिम समस्या का विवेचन है, जैसा हमने आज से ४०-४५ वर्ष पहले उसे समझा था। अब हम स्वीकार करते हैं कि उसमें भूल थी।

देश के बंटवारे से हमें कुछ दुःखद सबक मिले हैं। ध्यान रहे कि भारत का मुसलमान स्वभावतया यह चाहेगा कि भारत और पाकिस्तान में गाढ़ी दोस्ती रहे। ऐसा करने से भारत का नुकसान होगा और भारतीय मुसलमानों के साथ अन्याय होगा। उसकी वफादारी का सबसे बड़ा सबूत उसका भारत में ऐसे धर्मनिरपेक्ष समाज की रचना में सहयोग है, जिसमें भिन्न-भिन्न धर्म, भाषा और प्रदेशों के लोग आपस में मिलजुलकर रह सकें। मुसलमानों में एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपनी कठिनाइयों और कष्टों का दोष दूसरों को देगा। इस पुस्तक में मुसलमानों को इस प्रवृत्ति से सावधान किया गया है। यह मुसलमानों के पिछड़ेपन की निशानी है कि उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद की पुकार पर कान नहीं दिया। स्वतंत्र भारत में उनके उन्नति न करने का यही सबसे बड़ा कारण है। जब तक मुसलमान साम्प्रदायिक संगठन और आन्दोलन पर भरोसा करते रहेंगे, उनको निराशा ही हाथ लगेगी। जब तक वह दूसरों के साथ मिलकर ऐसे समाज की रचना में योग नहीं देंगे, जिसमें विभिन्नता के बीच एकता रहे, वे ठोकर खाते रहेंगे।

यह भी सच है

महान क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा



भगवती चरण वोहरा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी थे। वे हिन्दुस्तान प्रजातांत्रिक सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य और भगत सिंह के साथ ही एक प्रमुख सिद्धांतकार होते हुए भी गिरफ्तार नहीं किए जा सके और न ही वे फाँसी पर चढ़े। उनकी मृत्यु बम परीक्षण के दौरान दुर्घटना में हुई। परिचय : भगवती चरण वोहरा का जन्म जुलाई १९०३ में आगरा में हुआ था। उनके पिता शिव चरण वोहरा रेलवे के एक उच्च अधिकारी थे। बाद में वे आगरा से लाहौर चले आये। उनका परिवार आर्थिक रूप से सम्पन्न था। भगवती चरण की शिक्षा-दीक्षा लाहौर में हुई। उनका विवाह भी कम उम्र में कर दिया गया। पत्नी का नाम दुर्गा था। बाद के दौर में उनकी पत्नी भी क्रांतिकारी कार्यों की सक्रिय सहयोगी बनी। क्रांतिकारियों द्वारा दिया गया 'दुर्गा भाभी' सम्बोधन एक आम सम्बोधन बन गया। लाहौर नेशनल कॉलेज में शिक्षा के दौरान भगवती चरण ने रूसी क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेकर छात्रों की एक अध्ययन मंडली का गठन किया था। राष्ट्र की परतंत्रता और उससे मुक्ति के प्रश्न पर केन्द्रित इस अध्ययन मंडली में नियमित रूप से शामिल होने वालों में भगत सिंह, सुखदेव आदि प्रमुख थे। बाद में चलकर इन्हीं लोगों ने नौजवान भारत सभा की स्थापना की। पढ़ाई के दौरान १९२१ में ही भगवती चरण गाँधी जी के आह्वान पर पढ़ाई छोड़कर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े थे। बाद में आन्दोलन वापस होने पर इन्होंने कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। बी.ए. की परीक्षा पास की साथ ही नौजवान भारत सभा के गठन और कार्य को आगे बढ़ाया। इस सभा के जनरल सेक्रेटरी भगत सिंह और प्रोपेगंडा (प्रचार) सेक्रेटरी भगवती चरण थे। अप्रैल १९२८ में नौजवान भारत सभा का घोषणा पत्र प्रकाशित हुआ। भगत सिंह व अन्य साथियों से सलाह-मशविरे से मसविदे को तैयार करने का काम भगवती चरण वोहरा का था। नौजवान भारत सभा के उत्कर्ष में भगवती चरण और भगत सिंह का ही प्रमुख हाथ था। भगत सिंह के अलावा वे ही संगठन के प्रमुख सिद्धांतकार थे। क्रांतिकारी विचारक, संगठनकर्ता, वक्ता, प्रचारकर्ता, आदर्श के प्रति निष्ठा व प्रतिबद्धता तथा उसके लिए अपराजेय हिम्मत-हौसला आदि सारे गुण भगवती चरण में विद्यमान थे। किसी काम को पूरे मनोयोग के साथ पूरा करने में भगवती चरण बेजोड़ थे। १९२४ में सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल द्वारा 'हिन्दुस्तान-प्रजातांत्रिक संघ के घोषणा-पत्र-दि रिवोल्यूशनरी' को १ जनवरी १९२५ को व्यापक से वितरित करने की प्रमुख जिम्मेदारी भगवती चरण पर ही थी जिसे उन्होंने बखूबी पूरा किया। बाद के दौर में संगठन के साथियों में भगवती चरण के बारे में यह संदेह फैलाया गया कि वे सी.आई.डी. के आदमी हैं और उससे तनखाह पाते हैं। इन आरोपों को लगाने के पीछे उस समय संगठन में आये वे लोग थे जिन्हें किसी काम का जोखिम नहीं उठाना था। इसलिए भी वे लोग बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी भगवती चरण पर आरोप लगाकर न केवल खुद नेतृत्व में आना चाहते थे बल्कि क्रांतिकारी कार्यवाहियों पर रोक भी लगाना चाहते थे। ऐसे लोगों का यह उद्देश्य भी था कि संगठन के काम को आपसी बहस, मुबाहिसा, प्रचार और पैसा जमा करने के काम तक सीमित कर दिया जाए। भगवती चरण पर सी. आई.डी. का आरोप लगाने वालों में प्रमुख सज्जन जयचन्द्र विद्यालंकार थे। वे उन दिनों नेशनल कॉलेज के अध्यापक भी थे। नौजवान क्रांतिकारी टोली पर उनके पद, ज्ञान व विद्वता की धाक भी थी। भगवती चरण ऐसे आरोपों से बेपरवाह रहते हुए क्रांतिकारी कार्यों को आगे बढ़ाने में लगे रहते थे। उनका कहना था कि 'जो उचित है उसे करते जाना उनका काम है। सफाई देना और नाम कमाना उनका काम नहीं है।' भगवती चरण लखनऊ के काकोरी केस, लाहौर बड्यंत्र केस और फिर लाला लाजपत राय को मारने वाले अंग्रेज सार्जेंट-सांडर्स की हत्या में भी आरोपित थे। पर न तो कभी पकड़े गये और न ही क्रांतिकारी कार्यों को करने से अपना पैर पीछे खींचा। इस बात का सबूत यह है कि इतने आरोपों से घिरे होने के बाद भी भगवती चरण ने स्पेशल ट्रेन में बैठे वायसराय को चलती ट्रेन में ही उड़ा देने का भरपूर प्रयास किया। इस काम में यशपाल, इन्द्रपाल, भागाराम उनके सहयोगी थे। महीने भर की तैयारी के बाद नियत तिथि पर गुजराती स्पेशल ट्रेन के नीचे बम विस्फोट करने में ये लोग कामयाब भी हो गये। परन्तु वायसराय बच गया। ट्रेन में खाना बनाने और खाना खाने वाला डिब्बा क्षतिग्रस्त हो गया और उसमें एक आदमी की मौत हो गई।

साभार सत्यचक्र

कबिरा खड़ा बजार में

राजनीति के महारथी हमारे पीएम



देश के प्रधानसैनिक उर्फ प्रधानसेवक उर्फ प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी ने इस बार की दीवाली जम्मू कश्मीर के गुरेज सेक्टर में सेना के जवानों के साथ मनाई। गुरेज सेक्टर नियंत्रण रेखा के पास ही स्थित है, जहां तैनात सैनिक अपनी जान की परवाह न करते हुए देश की सुरक्षा में लगे रहते हैं। मोदीजी ने सैनिकों से कहा कि वे अपने परिवार के साथ त्योहार मनाना चाहते थे, सो उनके बीच पहुंच गए। वैसे इससे पहले साल २०१४ में नरेंद्र मोदी ने सियाचिन में सेना के जवानों के साथ दीवाली मनाई थी, २०१५ में पंजाब में भारत पाकिस्तान बार्डर पर जवानों के साथ वे दीवाली पर थे और २०१६ में हिमाचल प्रदेश के किन्नौर में चीन सीमा पर तैनात आईटीबीपी के जवानों के साथ उन्होंने दीवाली मनाई थी। यानी परिवार की अलग-अलग शाखाओं के साथ वे दीवाली मनाते रहे। बेशक इससे उनके परिजनो यानी सैनिकों का हौसला बुलंद होता होगा। लेकिन सैनिकों के असली परिवार वाले भी खुश होते, अगर प्रधानसेवक जी अपने पड़ोसियों के साथ ऐसा माहौल बना पाते कि सीमा पर दिन-रात युद्ध जैसी स्थिति खत्म हो जाती। पिछले तीन सालों से अधोषित युद्धकाल में कई सैनिक शहीद हो गए हैं। और हर सैनिक को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई देते हुए दुश्मनों को कड़ा सबक सिखाने का राजनैतिक आलाप किया गया। लेकिन हालात बद से बदतर ही हो रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में न जनता को अमन चैन मिल रहा है, न वहां तैनात सैनिकों को। क्या केवल त्योहार मनाने की राजनीति के लिए सैनिक मोदीजी के परिजन हैं और शेष वक्त वे अकेले तमाम मुसीबतों को झेलते खड़े रहें। वैसे दो अलग-अलग चीजों को मिलाने की कला कोई मोदीजी से सीखे। उन्होंने सामाजिक त्योहारों को राजनीति और सैन्यनीति से बड़ी चतुराई से जोड़ा। गुरेज में उन्होंने सैनिकों वाली जैकेट पहन कर जो फोटो खिंचाई, उसे भी पूरा देखें तो पता चलता है कि नीचे राजनीति की पोशाक है, ऊपर सैनिकों की। पोशाक में दो नीतियों का यह मेल क्या प्रतीकात्मक है। इसके क्या मायने हैं, इस पर विचार करना चाहिए। सैनिकों के साथ दीपावली मनाने के बाद मोदीजी केदारनाथ पहुंच गए और यहां भी उन्होंने धर्म को राजनीति से बखूबी मिलाया। केदारनाथ पहुंच कर भोलेनाथ की पूजा के बहाने उन्होंने दूसरी पार्टियों पर आरोप लगाया कि वे तो यहां आई बाढ़ के बाद पुनः स्थापित करना चाहते थे, लेकिन तत्कालीन सरकार ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। फिर भाजपा सरकार आई तो उन्हें यकीन हो गया कि उनके ही हाथों सुधार होगा। समझ नहीं आया कि प्रधानमंत्री वहां पूजा करने गए थे या बयानबाजी करने। धर्म की जगह भी मोदी जी अपने फैशन को नहीं छोड़ पाये। वैसे औघड़दानी महादेव की पूजा करने के लिए प्रधानमंत्री ने जो पोशाक धारण की थी, उसकी भी काफी चर्चा रही। खासकर उनके काले चश्मे की। यहां उन्होंने धर्म के साथ फैशन को बड़े सलीके से मिला लिया। वीरता और भक्ति के बाद अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राजनीति के लिए महीने में तीसरी बार गुजरात पहुंच चुके हैं। आज की वे घोषणाएं पूरी कर लें, उसके बाद चुनाव आयोग को उचित लगेगा तो वह गुजरात चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया गया। अगर हिमाचल प्रदेश के साथ ही गुजरात में भी चुनाव की घोषणा हो जाती तो प्रधानमंत्री जी की लोकलुभावन योजनाओं पर आचार संहिता की बंदिश लग जाती। अच्छा है उन्हें वक्त मिला है और वे इसका लाभ उठा रहे हैं। सैन्य नीति, धर्म नीति और राजनीति इनके बीच सत्य और आदर्शों की नीति की बात पैबंद की तरह लगती है। बाकी जनता को तय करना है कि वह पैबंद को मखमल माने या टाट।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2016-17-18



साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

दिनांक 08 नवम्बर से 14 नवम्बर 2017 तक

रजि सं. 29007/77

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।

11/06/18
666666-1186